—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2006 वर्ष 5 अंक 03

"जब आग लगी हो, और बस्ती जल रही हो तो जो बोल सकता है उसको बोलना चाहिए, जो दौड़ सकता है उसको दौड़ना चाहिए, जो दुहाई दे सकता है उसको दुहाई देना चाहिए।"

(पयामे इन्सानियत)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ औलियाउल्लाह	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
❐ दीने इस्लाम का मिजाज	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	8
❐ सीरतुन्नबी	अल्लामा शिब्ली नोमानी	9
❐ सर की बीमारियां	इदारा	13
❐ संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	14
❐ निरन्तर विपत्तियों तथा मुसीबतों....	मौ० शम्सुल हक नदवी	17
❐ हमारी समस्याओं की जड़ और दअवत...	अमीनुद्दीन शुजाअउद्दीन	19
❐ एक पुस्तिका का परिचय		22
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मु० तारिक नदवी	23
❐ हजरत मुहम्मद (स०) साक्षात करूणा	मौ० असअदुल्लाह नदवी	25
❐ मसाज करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है	जरीना शजाअत	26
❐ डिन्मार्की कार्टूनिस्ट की अशिष्टता		27
❐ एक नअ़त		27
❐ जिन्दगी की असल पूंजी	मौ० अब्दुल्लाह हसनी	28
❐ बहुत ग्रेट व्यक्तित्व	खुर्शीदुल इस्लाम	31
❐ वैदिक काल की सभ्यता	इदारा	33
❐ जराइम	अब्दुल हन्नान सीवानी	35
❐ उर्दू जुबां	शाहिद रूदौलवी	37
❐ समाजी खिदमतें और मस्जिदें	स०मु० तारिक नदवी	38
❐ इस्लामी समाज की चित्रकारी	मु० जसीमुद्दीन कासिमी	39
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

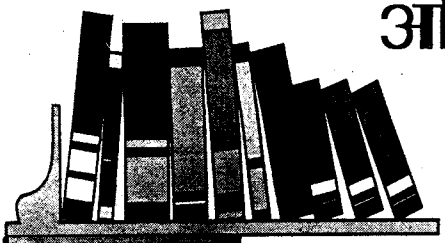

औलियाउल्लाह (ईशभक्त) रह०

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

सुन लो अल्लाह के वलियों के लिये न कोई ख़ौफ़ है न कोई ग़म, वह अल्लाह के वली वह हैं जो ईमान लाए और तक़्वा इख़्तियार किया। उनके लिये इस दुन्या की ज़िनदगी में भी ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में भी, अल्लाह की बातें बदलती नहीं हैं।···· यह बड़ी कामयाबी है। (पवित्र क़ुर्आन १०:६२–६४)

अ़रबी लफ़्ज़ (शब्द) वली के बहुत मअ़ना (अर्थ) हैं। उनमें से एक मअ़ना ज़िम्मेदार के भी हैं चुनांचि हर नाबालिग़ बच्चे का शरअ़ी ज़िम्मेदार उसका वली है। एक मअ़ना कारसाज़ काम बनाने वाले के होते हैं इस मअ़ना में सिर्फ़ अल्लाह को लिया जाता है। इस मअ़ना में यह लफ़्ज़ बहुत सी आयतों में आया है।

वली का एक मअ़ना दोस्त के हैं। अल्लाह का वली यअ़नी अल्लाह का दोस्त, दोस्त यहाँ उस मफ़्हूम में नहीं है जिस मफ़्हूम में हम अपने साथियों और दोस्तों के लिये बोलते हैं बल्कि यहाँ इस मफ़्हूम में है कि : बस हम अल्लाह के हो गये। सबसे नाता तोड़ लिया, अल्लाह से नाता जोड़ लिया, हम माँ–बाप की सेवा इस लिये करते हैं कि उसने हम को हुक्म दिया हम बीवी बच्चों, अज़ीज़ व अक़ारिब के हुक़ूक़ इस लिये अदा करते हैं कि अल्लाह ने हमको उनकी अदाएगी का हुक्म दिया। इस दोस्त को हम हिनदी में भक्त कह सकते हैं। लफ़्ज़ वली दोस्त के मअ़ना में अल्लाह के लिये भी बोलते हैं। लेकिन अल्लाह के लिये इस मफ़्हूम में बोलेंगे, अपने बन्दे से महब्बत करने वाला, उस पर रह्म करने वाला उसको क्षमा कर देने वाला, अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब आख़िरी नबी से फ़रमाया : कह दो अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुमसे महब्बत करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहों को मुआ़फ़ कर देगा वह ग़फ़ूर है रहीम है। (३:३१)

सूर–ए–यूनुस की आयत नम्बर ६३ में अल्लाह ने अपने वली की पहचान में बताया कि वह ईमान वाले होते हैं और तक़्वे वाले होते हैं। क़ुर्आन में एक जगह फ़रमाया : "अल्लाह दोस्त है उनका जो ईमान लाए, अल्लाह उनको ज़ुलुमात (अन्धेरियों) से निकालकर नूर (उजाले) में लाता है। (२:२५७) मअ़लूम हुआ कि ईमान अगर सच्चा है तो अल्लाह तआ़ला ख़ुद उसके दोस्त व कारसाज़ बनकर उसको गुमराही की अन्धेरियों से निकाल कर हिदायत के नूर की तरफ़ लाते हैं ईमान वालों की पहचान अल्लाह तआ़ला ने इस तरह बताई है फ़रमाया : "ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र आता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो उनके ईमान में और मज़बूती आती है और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं, वह नमाज़ क़ाइम करते हैं और जो कुछ अल्लाह ने उनको दे रखा है उसमें से (अल्लाह को राज़ी करने के लिये) ख़र्च करते हैं; सच्चे ईमान वाले यही हैं उनके रब के पास उनके लिये बड़े दर्जे हैं, अल्लाह की मग़्फ़िरत है और इज़्ज़त की रोज़ी है।" (८:२–४)

एक और जगह फ़रमाया : मोमिन तो वह है जो अल्लाह पर ईमान लाए, उसके रसूल पर

ईमान लाए और शक में न पड़े और अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया यही सच्चे लोग हैं। (४६:१५)

ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ईमान क्या है के सुवाल के जवाब में फ़रमाया था कि : "ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फ़िरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, क़ियामत के दिन पर और तक़्दीर पर अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की तरफ़ से है। (मुस्लिम)

हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने भी मुतअ़द्दिद मौक़ओं पर मोमिन की पहचान बताई है उनमें से सबसे अहम यह है आप ने फ़रमाया : "तुम में से कोई भी उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक अपने बाल बच्चों अपने माल और सारे लोगों से ज़ियादा मुझसे महब्बत न करे।" (मुस्लिम) एक रिवायत में आया है कि "उस वक़्त तक कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने बाप, बेटे और सारे लोगों से ज़ियादा मुझे न चाहे। (बुख़ारी) एक रिवायत में तो है "कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक मुझे अपनी जान से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ न समझे। (मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़ाक़) अगर्चि उ़लमा ने यहां ईमाने कामिल मुराद लिया है लेकिन हदीस में लफ़्ज़ कामिल नहीं आया है।

यह मुख़्तसर बात हुई ईमान के बारे में कि अल्लाह के वली की पहली पहचान ईमान लाना है। दूसरी पहचान यह है कि अल्लाह के वली तक़्वा इख़्तियार करते हैं, मुत्तकी (संयमी) होते हैं। अपने हर काम में अल्लाह तआ़ला की इताअ़त का लिहाज़ रखते हैं। क़ुर्आने मजीद में तक़्वा इख़्तियार करने के हुक्म की बड़ी तअ़दाद में आयतें हैं यहाँ हम तक़्वे वालों की पहचान में एक आयत का मफ़्हूम नक़्ल करते हैं। यह आयत उस वक़्त उतरी थी जब क़िब्ला बैतुल मुक़द्दस से बदलकर कअ़बा हो गया था तो यहूद नसारा यह बहस उठाए हुए थे कि देखो मुसलमानों ने तो क़िब्ला ही बदल दिया, अल्लाह ने फ़रमाया : "नेकी यह नहीं है कि तुम (इबादत में) पूरब को मुंह करो या पिच्छम को बल्कि नेकी यह है कि ईमान लाए अल्लाह पर, उसके फ़िरिश्तों पर उसकी किताबों पर उसके नबियों पर (फिर वहाँ से इबादात में जिधर मुंह करने को कहा जाए उधर करे।) और अल्लाह की महब्बत में यअ़नी अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये अपने रिश्तेदारों पर, यतीमों पर, परेशान हाल मुसाफ़िरों पर, सुवाल करने वालों पर, ग़ुलाम आज़ाद करने पर अपना माल ख़र्च करे और नमाज़ क़ाइम करे, और ज़कात अदा करे। और जो हज़रात किसी से वअ़दा करते हैं तो पूरा करते हैं और तंगी में बीमारी में सब्र करते हैं और दौराने जंग सब्र के साथ जमे रहते हैं, यही सच्चे लोग हैं और यही तक़्वे वाले लोग हैं। (२:१७७)

यूँ तो हर मुसलमान अल्लाह का वली है "अल्लाह ईमान वालों का वली है" (३:६८) लेकिन यह वलायते आ़म्मा है जो हर ईमान वाले को हासिल है। वलायते ख़ास्सः (अर्थात अल्लाह से विशेष निकटता वाली भक्ति) की पहचान वही है जो ऊपर की आयतों में कुछ तफ़्सील से बयान हुई। लेकिन यह वलायते ख़ास्सः कैसे मिले तो सीधा सा जवाब तो यह है कि अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत और अ़क़ीदत और शरीअ़त की पाबन्दी से, मगर बारहा ऐसा देखा गया कि एक शख़्स अपने को शरीअ़त का पाबन्द समझता है लेकिन हक़ीक़त में उससे शरीअ़त की कई बातें नज़र अन्दाज़ हो रही होती हैं। इसी तरह वह समझता है कि वह अल्लाह का वली है लेकिन वह धोखे में होता है इस लिये चाहिये कि वह जिस को अल्लाह का वली समझता हो उसकी निगरानी में शरीअ़त की पाबन्दी करे। उसके हाथ में हाथ देकर अ़ह्द करे कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से महब्बत रखूंगा, ईमान पर क़ाइम रहते हुए शरीअ़त की पाबन्दी करूंगा। इसी को बैअ़त होना कहते हैं। जिस तरह फ़िक़्ह के इमामों ने किताब व सुन्नत से इबादात

(शेष पृष्ठ १६ पर)

क़ुरआन की शिक्षा

मौ० मुहम्मद उवैस नदवी

अल्लाह के वली

याद रखो कि अल्लाह के वलियों (दोस्तों) पर क़ियाम के दिन न तो ख़ौफ़ होगा और न वह रंजीदा होंगे। यह वह लोग हैं जो ईमान लाए और अल्लाह से डरते हैं। (यूनुस ६२,६३) जो लोग अल्लाह की इताअ़त और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी के ज़रीअ़े अल्लाह के प्यारे बन जाते हैं, वह उसके वली कहलाते हैं। अल्लाह के वली की पहचान यह है कि वह दीन का पैरव हो अल्लाह व रसूल (सल्ल०) की हर बात मानता हो। अल्लाह ने फ़रमाया : तक़वे वाले ही अल्लाह के दोस्त हैं। (अन्फ़ाल :३४) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया मेरा दोस्त अल्लाह और नेक काम करने वाले मुसलमान हैं। हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं कि कुछ लोगों ने अल्लाह की महब्बत का दअ़वा किया तो उनके इम्तिहान के लिये यह आयत उतरी : ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से महब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुम से महब्बत करेगा। (आलि इमरान :३१) मतलब यह कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी एक कसौटी है। जो इस पर पूरा उतरा वह अल्लाह का वली है और जो इस से अलग है उसको हरगिज अल्लाह का वली न समझो। उसकी बातों पर भरोसा मत करो और उससे अपना दिल मत लगाओ।

हज़रत जुनैद बग़दादी एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, उन्होंने फ़रमाया मख़्लूक़ पर तमाम रास्ते बन्द हैं सिवा इसके कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के रास्ते पर चले। हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी (रह०) ने फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह के तक़्वे और शरीअ़त की पाबन्दी की वसीयत करता हूँ।

हज़रत ख़्वाजा मअ़सूम भी एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उन्होंने कहा जिसका अमल न रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुवाफ़िक है और न वह शरीअ़त का पाबन्द है, उससे दूर रहो। फ़रमाया नजात का मुआ़मला हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी ही में है।

अल्लाह का वली वही है जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी में दीन पर अमल करता है। जो ऐसा नहीं है वह अल्लाह का वली नहीं है।

रोज़ी की तलाश

तो फैल पड़ो ज़मीन में और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो। (जुमुअ़ : १०)

इस आयत में रोज़ी को अल्लाह का फ़ज़्ल कहा गया है। हलाल रोज़ी की तलाश भी अल्लाह की इताअ़त और इबादत है। मिहनत मज़दूरी, तिजारत, खेती, मुलाज़िमत जिस तरह भी मुम्किन हो पाए रोज़ी हासिल करना चाहिये ताकि बीवी बच्चों का हक़ अदा हो सके और अल्लाह की राह में ख़र्च किया जा सके। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा कि फ़र्ज़ इबादतों के बअ़द हलाल कमाई की तलाश फ़र्ज़ है।

सहाबा (रज़ि०) आ़म तौर से अपनी कमाई के लिये कोई न कोई काम करते थे कोई तिजारत करता था, कोई दूसरे पेशों के ज़रीअ़े अपनी रोज़ी का सामान पैदा करता था। हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम तिजारत करते थे। हज़रत सल्मान (रज़ि०) चटाई बनाते थे, एक सहाबी फ़ावड़ा चलाते थे, उनके हाथ काले हो गये थे, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने देखा तो पूछा कि क्या तुम्हारे हाथ पर कुछ लिखा है? बोले नहीं पत्थर पर फावड़ा चलाता हूँ और उससे अपने बाल बच्चों के लिये रोज़ी पैदा करता हूँ। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन सहाबी का हाथ चूम लिया। मालदार और तन्दुरुस्त आदमी को मांगना जाइज़ नहीं है। बअ़ज़ सहाबियात औरतें कपड़ा बुन्ती थीं।

जो लोग ताक़त के बावजूद बेकार बैठे रहते हैं और सदक़ा व ख़ैरात का इन्तिजार करते हैं या किसी उज़्र के बिना लोगों से मांगते हैं उनको अल्लाह से डरना चाहिये।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

नेकियों की मुतअद्दिद सूरतें

हज़रत अबू ज़र जुन्दुब (र०) बिन जुनादः से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! कौन सा अमल अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया, अल्लाह पर ईमान और उसके रास्ते में जिहाद। मैंने कहा, किस गर्दन का आज़ाद करना अफ़ज़ल है? फ़रमाया जो मालिकों के नज़दीक सबसे आला और सबसे बेशक़ीमत हो। अर्ज़ किया, अगर मैं यह न कर सकूं? फ़रमाया, करनेवालों की मदद करो या बे–सलीक़ः और फूहड़ आदमी का काम बना दो। कहा, अगर यह भी न हो सके? फ़रमाया, लोगों को अपनी ज़ात से तक़लीफ़ न पहुँचाओ तो यह खुद अपने ऊपर तुम्हारा सदक़ः होगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

सदक़ः की बहुत सी सूरतें

हज़रत. अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे हर जोड़ पर सदक़ः है, हर तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना) सदक़ः है। हर तहलील (ला इलाह इल्लल्लाह कहना) सदक़ः है। हर तह्मीद (अल्हम्दु लिल्लाह कहना) सदक़ा है। हर तक्बीर (अल्लाहु अक्बर कहना) सदक़ः है। नेकी का हुक्म देना सदकः है। बुराई से रोकना सदकः है। और चाश्त की दो रकअतें इन चीजों का बदल हो सकती है।

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझ पर मेरी उम्मत के आमाल पेश किये गये, उनकी भलाइयाँ और बुराइयाँ दिखाई गयीं, मैंने उनके आमाल के महासिन में रास्ता की गन्दगी और तकलीफ़ की चीज़ का हटा देना पाया है और उनके आमाल की बुराइयों में यह पाया कि खकार और थूक हो और उसको दबाया न जाये। (यअनी खुला छोड़ दिया जाए)

ग़रीबों का सदक़ः क्या है

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि ग़रीबों ने कहा, या रसूलल्लाह! दौलतमन्द हम पर अज्र में सबक़त ले गये। हम नमाज़ पढ़ते हैं, वह भी नमाज़ पढ़ते हैं; हम रोज़े रखते हैं, वह भी रोज़े रखते हैं; और वह अपने फ़ाज़िल मालों से सदक़ः देकर अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा कर लेते हैं। आपने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए भी सदक़ः में वुस्अत रखी है। बेशक हर तस्बीह सदक़ः है। हर तक्बीर सदक़ः है। हर तह्मीद सदक़ः है। हर तह्लील सदकः है। नेकी का हुक्म देना सदकः है। और बुराई से बाज़ रखना सदकः है। उन्होंने अर्ज़ किया, अगर कोई अपनी ख़्वाहिश के काम करे तो? फ़रमाया, कोई अपनी ख्वाहिश हराम तौर से पूरी करता है तो गुनहगार होता है। इसी तरह हलाल तौर से जो अपनी ख़्वाहिश पूरी करेगा तो लाज़िमन सवाब का मुस्तहक़ होगा।

मुसलमान भाई से ख़ुश होकर मिलना

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया किसी नेक काम को हक़ीर न समझो चाहे अपने भाई से खन्दः पेशानी से मिलना ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

सदक़ः की बहुत सी सूरतें

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान की अपने हर जोड़ पर सदक़ः देना लाज़िम है। दो आदमियों के दर्मियान अदल करना सदकः है। और आदमी की मदद करना, किसी को उसकी सवारी पर सवार करा देना या किसी का सामान उसकी सवारी पर लाद देना सदक़ः है। अच्छी बात कहना सदकः है। और हर क़दम जो नमाज के लिए उठे, सदक़ः है। रास्ते से कांटे वग़ैरः हटा देना सदक़ः है। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदम की औलाद में हर इन्सान तीन सौ साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है। जिसने अल्लाह की बड़ाई की और अल्लाह की तारीफ़ की, अल्लाह की तहलील की, अल्लाह की पाकी बयान की और अल्लाह से बख़्शिश चाही, और पत्थर, कांटा या हड्डी लोगों के रास्ते से हटा दी और नेकी का हुक्म दिया, बुराई से बाज़ रक्खा, तीन सौ साठ की तादाद

में यह सब नेकियाँ कीं, तो वह उस दिन इस हालत में चले फिरेगा कि अपने को जहन्नम से बचा चुका होगा।

मस्जिद में आने की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया, जो मस्जिद में सुबह को आया या शाम को आया उसके लिए अल्लाह ने जन्नत की मिहमानी तैयार की है, जब सुबह और शाम आये। (बुखारी व मुस्लिम)

तुहफ़: में अदना चीज़ भी हक़ीर न समझें

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ मुसलमान औरतो! अपने किसी हमसाये के लिए किसी तुहफ़: को हक़ीर न समझो अगरचि बकरी का एक खुर ही हो। (बुखारी मुस्लिम)

रास्ते से काँटे का हटा देना भी ईमान की एक शाख है

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया कि ईमान की साठ या सत्तर शाखें हैं उनमें 'ला इलाह इल्लल्लाह' का कहना अफ़ज़ल है। और अदना काम रास्ते से काँटे वग़ैर: का हटा देना है। और हया ईमान की एक शाख है। (बुखारी मुस्लिम)

एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने का सवाब

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, एक आदमी जा रहा था, रास्ते में प्यास ने बेताब किया। एक कुआँ नज़र आया, उसमें उतरा, पानी पिया और निकल आया। क्या देखता है कि एक कुत्ता प्यास की शिद्दत से जबान निकाले हुए गीली मिट्टी चाट रहा है। उसने ख़्याल किया कि यह कुत्ता प्यासा है और मेरी ही तरह इसको प्यास है। वह कुएँ में उतरा और अपना मोज़ा पानी से भरकर मुंह में दबा लिया और बाहर निकलकर कुत्ते को पानी पिलाया तो अलल्लाह तआ़ला ने उसका शुक्रिया अदा किया और उसको बख़्श दिया। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह! हमारे लिए क्या बहाइम में भी अज्र है। आपने फ़रमाया हर जानदार में अज्र है। (बुखारी मुस्लिम)

और बुखारी की एक रिवायत में है कि अल्लाह ने उसके काम को पसन्द फ़रमाया और बख़्श दिया और जन्नत में दाखिल किया और इन्हीं दोनों की एक रिवायत में है कि कुत्ता कुएँ के गिर्द फिर रहा था, क़रीब था कि प्यास उसका काम तमाम कर दे; नागाह बनी इस्राईल की बदकार औरतों में से एक औरत ने उसकी इस हालत को देखा तो अपने मोज़े उतार कर उसमें पानी भर लाई, कुत्ते को पिला दिया। पस अल्लाह तआला ने उस औरत को इस काम की वजह से बख़्श दिया। नोट : हो सकता है यह सब वाक़िआ़त अलग-अलग हुए हों।

रास्ता चलने वालों को तकलीफ़ से बचाने का सवाब

हज़रत अबूजर (र०) से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं– आपने फ़रमाया कि मैंने एक आदमी को जन्नत में घूमते और फिरते हुए देखा है और यह मर्तबः उसको इस वजह से हासिल हुआ कि उसने एक ऐसे दरख़्त को उखाड़ डाला था जिससे रास्ता चलनेवालों को तकलीफ़ होती थी। (मुस्लिम)

जब अल्लाह के महबूब और आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नामे नामी किसी की ज़बान से सुनें या अपनी ज़बान से अदा करें या अपने कलम से लिखें, या पढ़ें तो आप पर दुरूद ज़रूर पढ़ें वरना गुनहगार होंगे। आपका नाम आने पर सब से छोटो दुरूद "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" है।

(पृष्ठ १८ का शेष)

स्थान) बनाया है अतः जिन्दगी गुजारने के लिए शरीअ़त ने जिन कारणों और साधनों को इख़्तियार करने का हुक्म दिया है उनको इख़्तियार करना भी ज़रूरी है लेकिन कामयाबी का भरोसा अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर होना चाहिए। सफलता की सूरत में इतराना नहीं चाहिए। असफलता की सूरत में निराश नहीं होना चाहिए। अधिक तशरीह (स्पष्टीकरण) की ज़रूरत इसलिए नहीं है कि इंसान स्वाभाविक तोर पर इन साधनों को इख्तियार करनें की तरफ खुद कोशिश करता रहता है। यह वज़ाहत (स्पष्टीकरण) इसलिए कर दी गई कि किसी के ज़ेहन में यह बात न आ जाए कि जब दुआ़ ही सब कुछ है तो आर्थिक आदेश क्यों बयान किए गए हैं।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

दीने इस्लाम का मिज़ाज

और उसकी खास-खास बातें

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

इस्लमा में इबादात का मकाम

अक़ायद के बाद इस्लाम में जिस चीज़ पर बड़ा ज़ोर और जिसकी ताकीद की गई है वह इबादत हैं। जो इनसानों की पैदाइश का पहला मक़सद हैं :–

"तर्जुमा : और हमने जिन्न व इन्स को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें।" (सूरः ज़ारियात–५६)

तमाम आसमानी शरीअ़तों और मज़ाहिब ने अपने अपने समय में इबादात की दावत दी है। अल्लाह के रसूल स० इबादात का बड़ा इहतमाम फ़रमाते थे। इबादात के बारे में बीसों आयतें और अहादीस आई हैं। कुरआन जिहाद व हुकूमत को वसीला और नमाज़ को मक़सद बताता है। इरशाद होता है :–

तर्जुमा : "यह वह लोग हैं कि अगर हम इनको मुल्क में दस्तरस दें तो नमाज़ पढ़े, और ज़कात अदा करें, और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें, ओर सब कामों में अंजाम ख़ुदा ही के इख़्तियार में है। (सूरः हज्ज–४१)

कुर्आन पर एक नज़र डालने से मालूम होता है कि अल्लाह से तअ़ल्लुक उसकी बन्दगी और इबादात (नमाज़, ज़कात, रोजा, हज) वह चीज़े हैं जिनके बारे में क़ियामत में सबसे पहले सुवाल होगा। एक जगह उन लोगों से सुवाल व जवाब के मौक़े पर जो जहन्नम के अज़ाब के मुस्तहक़ हुए इरशाद होता है :–

तर्जुमा :– "कि तुम दोज़ख़ में क्यों आ पड़े, वह जवाब देंगे कि हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे, और न फ़कीरों को खाना खिलाते थे, और अहले बातिल के साथ मिलकर (हक़ से) इनकार करते थे, और रोज़े जज़ा को झुठलाते थे, यहाँ तक कि हमें मौत आ गई।" (सूरः मुद्दस्सिर ४२–४७) दूसरी जगह कुफ़्फ़ार के बारे में इरशाद होता है :–

तर्जुमा : "तो इस (ना आक़िबत अन्देश) ने न तो (ख़ुदा के कलाम की) तस्दीक की, न नमाज़ पढ़ी, बल्कि झुठलाया और मुंह फेर लिया, फिर अपने घर वालों के पास अकड़ता हुआ चल दिया।" (सूरः क़ियामत ३१–३३)

इबादात में पहली चीज़ नमाज है। यह दीन का सुतून है। और मुसलमानों को काफ़िरों से अलग करती हे। अल्लाह तआला का इरशाद है :–

तर्जुमा :– "और नमाज़ पढ़ते रहो, और मुशरिकों में न होना" (सूरः– रूम ३१)

इमाम बुखारी रह० लिखते हैं कि हज़रत जाबिर रं० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया, "बन्दा और कुफ्र के दरमियान तर्के नमाज़ है।" और तिरमिज़ी शरीफ में है, "कुफ्र और इमान के दरमियान तर्के नमाज़ ही है।"

नजात की शर्त नमाज़ है। यह ईमान की हिफ़ाज़त करती है। और इसको अल्लाह ने हिदायत व तक़वा की बुनयादी शर्त के तौर पर बयान किया है। नमाज़ हर आजाद और गुलाम, अमीर व ग़रीब, बीमार और तन्दुरुस्त, मुसाफिर और मुक़ीम पर हमेशा के लिए और हर हाल में फर्ज हैं। किसी आक़िल बालिग़ इन्सान को किसी हाल में इससे छूट नहीं है। और इनके औक़ात मुक़र्रर हैं। मैदाने जंग में भी नमाज़ फ़र्ज है और उसे सलात खौफ़ कहते हैं। यह एक ऐसा फ़रीज़ा है कि किसी नबी और रसूल से भी साक़ित नहीं होता तो फिर किसी वली और आ़रिफ़ की क्या बात है। अल्लाह का इरशाद है :

तर्जुमा : "और अपने परवरदिगार की इबादत करते रहिये, यहाँ तक कि आप को अम्र यकीन पेश आ जाये।" (यानी ज़िन्दगी पूरी हो जाए) (सूरः हिज्र–९९)

नमाज़ मोमिन के हक़ में ऐसी है जैसे मछली के लिए पानी। नमाज़ मोमिन की "जायपनाह" और "जायअमन" है। नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है।

नमाज़ कोई ऐसा लोहे का सांचा नहीं है जिसमें सब नमाजी एक जैसे हों और हर नमाज़ी एक सतह पर रहने के लिए मजबूर हो और उससे आगे बढ़ने से क़ासिर हों। वह दरअस्ल एक बड़ा मैदान है जहाँ नमाजी एक हाल से दूसरे हाल तक और कमाल की उन मंज़िलों तक पहुँचता है जो उसके ख्याल में भी नहीं आ सकतीं। अल्लाह का

(शेष पृष्ठ १६ पर)

14वीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

अल्लामा शिबली नोमानी

जानदारों पर रहम

जानदारों पर बहुत रहम फरमाते थे। इन बेज़बानों पर जो ज़ुल्म मुद्दत से अरब में चले आते थे, रुकवा दिये। ऊँट के गले में क़लादः (गुलूबन्द) लटकाने का आम दस्तूर था उसको रोक दिया। ज़िन्दा जानवर के बदन से गोश्त का लोथड़ा काट लेते थे और उसको पकाकर खाते थे उसको मना कर दिया। जानवर की दुम और अयाल काटने से भी मना किया और फ़रमाया दुम उनका मोरछल है और अयाल उनका लिहाफ है। जानवरों को देर तक साज़ में बांधकर खड़ा रखने को भी मनाही की। और फ़रमाया कि जानवरों की पीठों पर अपने बैठने की जगह (बैठक) और कुर्सी न बनाओ। इसी तरह जानवरों को आपस में लड़ाना भी नाजाइज़ बताया। एक बेरहमी का दस्तूर यह था कि किसी जानवर को बांधकर उसका निशाना बनाते थे और तीर अन्दाज़ी का अभ्यास करते थे। इसे भी मना कर दिया।

एक दफा एक गधा राह में नज़र पड़ा जिसका चेहरा दाग़ा गया था। फ़रमाया कि जिसने इसका चेहरा दाग़ा है उस पर खुदा की लानत है। अलामत (पहचान) या बाज़ दीगर ज़रूरतों की वजह से ऊंटों और बकरियों को दागना पड़ता था। ऐसी हालत में आप उन अंगों को दाग़ते जो ज़ियादा नाज़ुक नहीं होते। हज़रत अनस कहते हैं कि मैं एक दफा बकरियों के रेवड़ में गया तो देखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० बकरियों के कान दाग़ रहे हैं। (तरमिज़ी अबूदाऊद) एक बार आप किसी सफ़र में जा रहे थे। लोगों ने मक़ाम पर मंज़िल किया। वहाँ एक चिड़िया ने अण्डा दिया हुआ था। एक व्यक्ति ने वह अण्डा उठा लिया। चिड़िया बेक़रार होकर पर मार रही थी। आप सल्ल० ने पूछा कि इसका अण्डा छीनकर किस ने इसको दुख पहुँचाया? उन साहब ने कहा या रसूलुललाह! मुझसे यह हरकत हुई है। आप ने फ़रमाया इसे वहीं रख दो।

एक सहाबी आपके पास आये उनके हाथों में चादर से छुपे हुए किसी चिड़िया के बच्चे थे। आपने पूछा तो अर्ज़ की कि एक झाड़ी से आवाज़ आ रही थी, जाकर देखा तो यह बच्चे थे। मैंने इनको निकाल लिया। चिड़िया ने यानि इनकी मां ने यह देखा तो मेरे सर पर मंडलाने लगी। आप ने फ़रमाया, जाओ और बच्चों को वहीं फिर रख आओ। (मिश्कात)।

एक बार रास्ते में एक ऊँट नज़र से गुज़रा जिसके पेट और पीठ भूख से एक हो गये थे। फ़रमाया इन बेजबानों के बारे में खुदा से डरो। एक दफ़ा एक अंसारी के बाग़ में आप तशरीफ़ ले गये एक भूखा ऊँट आपको देखकर बलबलाया। आपने शफ़क़त से उसपर हाथ फेरा। फिर लोगों से उसके मालिक का नाम पूछा मालूम हुआ कि एक अंसारी का है उनसे आपने फ़रमाया कि इस जानवर के मामले में तुम खुदा से नहीं डरते। (अबूदाऊद)।

रहमत व मुहब्बत आम

हुज़ूर अनवर सल्ल० की ज़ात पाक तमाम दुनिया के लिए रहमत बनकर आई थी। हज़रत मसीह ने कहा था कि मैं अमन का शहज़ादा हूँ लेकिन शान्ति के राजकुमार की अख़लाक़ी हुकूमत का एक कारनामा भी इसके सबूत में महफ़ूज़ नहीं। लेकिन अमन के शहनशाह को ख़ुदा वन्दे अज़ल ने ख़िताब किया :–

तर्जुमा : "मुहम्मद! हमने तुमको तमाम दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" (सूरः अम्बिया–१०७)

तुम आंहज़रत सल्ल० की क्षमा व दरगुज़र, के सैकड़ों वाक़्यात पढ़ चुके। नज़र आया होगा कि इस ख़ज़ान–ए–रहमत में दोस्त–दुश्मन, काफ़िर व मुस्लिम, बूढ़े, बच्चे, औरत, मर्द, आक़ा, गुलाम, इन्सान व हैवान हर एक बराबर का हिस्सेदार था। एक साहब ने आप सल्ल० से किसी पर बद्दुआ करने की दरख़्वास्त की तो ग़ज़बनाक होकर फ़रमाया, मैं दुनिया में लानत के लिए नहीं आया हूँ। रहमत बनाकर भेजा गया हूँ। आपने दुनिया को पैग़ाम दिया :–

तर्जुमः एक दूसरे पर बुग्ज़ व हसद (ईर्ष्या–द्वेष) न करो, एक दूसरे

से मुँह न फेरो। और ऐ ख़ुदा के बन्दो! सब आपस में भाई भाई बन जाओ।

और एक हदीस में हुक्म फ़रमायाः–

तर्जुमः लोगों के लिए वही चाहो जो अपने लिए चाहते हो तो मुस्लिम बनोगे।

हज़रत अनस बयान करते हैं कि आप ने फ़रमाया :–

तर्जुमः तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह सब लोगों के लिए वही महबूब (प्रिय) न रखो जो अपने लिए रखता है जब तक वह दूसरों को बेग़र्ज़ सिर्फ ख़ुदा के लिए प्यार न करे।

एक व्यक्ति ने मस्जिदे नबवी में आकर दुआ की ख़ुदाया! मुझको और मुहम्मद को मग़फ़िरत अता कर। आपने फ़रमाया ख़ुदा की रहमत को तुमने तंग कर दिया। एक और बयान में है कि एक एराबी मस्जिदे नबवी में आया और आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। नमाज़ पढ़कर अपने ऊँट पर सवार हुआ और बोला ख़ुदा वन्दा! मुझ पर और मुहम्मद पर रहमत भेज और हमारी रहमत में किसी और को शरीक न कर। आप ने सहाबा की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया बतासओ यह ज़ियादा राह भूला हुआ है या इसका ऊँट। यानी आप ने इस तरह की दुआ करना नापसन्द फ़रमाया।

दूसरों को देखकर दिल तुरनत पिघल जाता (रक़ीकुल क़ल्बी)

आंहज़रत सल्ल० बहुत रहम दिल और रक़ीकुल क़ल्ब थे। मालिक बिन हबीरस एक वफ़द (शिष्टमण्डल) के रुकन (सदस्य) बनकर आप के पास आये। उनको बीस दिन तक आपकी मजलिस में शिर्कत का मौक़ा मिला था। वह फ़रमाते हैं :–

तर्जुमः आंहज़रत सल्ल० रहीमुल मिजाज और रक़ीकुल क़ल्ब थे। हज़रत ज़ैनब का बच्चा मरने लगा तो उन्होंने आप सल्ल० को बुला भेजा और क़सम दिला ली कि ज़रूर तशरीफ़ लाइये। मजबूरन आप तशरीफ़ ले गये। हज़रत सअद बिन इबादः, मआज़ बिन जबल, अबी बिन कअब, ज़ैद बिन साबित भी साथ थे। बच्चे को लोग हाथ में लेकर सामने लाये। वह दम तोड़ रहा था। बेइख़्तियार आपकी आँखों से आँसू जारी हो गये। हज़रत सअद को तअज्जुब हुआ कि या रसूलुल्लाह! यह क्या? फ़रमाया, ख़ुदा उनही बन्दों पर रहम करता है जो औरों पर रहम करते हैं। (सही बुख़ारी) गज़व–ए–ओहद के बाद जब आप मदीना तशरीफ़ लाये तो घर–घर शहीदों का मातम बरपा था। औरतें अपने अपने शहीदों पर नौहा (शोक) कर रही थीं यह देखकर आपका दिल भर आया और फ़रमाया हम्ज़ः का कोई नौहा ख़्वाँ नहीं।

एक बार एक सहाबी जाहिलियत का अपना एक क़िस्सा बयान कर रहे थे कि मेरी एक छोटी लड़की थी। अरब में लड़कियों के मार डालने का कहीं–कहीं दस्तूर था। मैंने भी अपने लड़की को जित्रन्दा ज़मीन में गाड़ दिया। वह अब्बा–अब्बा कहकर पुकार रही थी और मैं उस पर मिट्टी के ढेले डाल रहा था। इस बेदर्दी को सुनकर आप सल्ल० की आँखों से बेइख़्तियार आँसू जारी हो गये। आप ने फ़रमाया कि इस क़िस्से को फिर दुहराओ। उन सहाबी ने इस दर्दनाक माजरे को दोबारा बयान किया। आप बेइख़्तियार रोये। यहाँ तक कि रोते–रोते दाढ़ी तर हो गयी।

हज़रत अब्बास बद्र में गिरफ़्तार होकर आये तो लोगों ने उनके हाथ पैर जकड़ कर बांध दिये थे और वह दर्द से कराह रहे थे। उनके कराहने की आवाज़ आप सल्ल० के कान में बार–बार पहुँच रही थी, लेकिन इस ख़्याल से उनके हाथ नहीं खोलते थे कि लोग कहेंगे कि यह अपने रिश्तेदार के साथ ग़ैर बराबरी की रहम दिली है, फिर भी नींद नहीं आती थी। आप बेचैन हो होकर करवटें बदल रहे थे। लोगों ने बेकरारी का सबब समझकर गिरहें ढीली कर दीं। हज़रत अब्बास की बेचैनी दूर हुई तो आपने आराम फ़रमाया।

मुसअब बिन उमैर एक सहाबी थे, जो इस्लाम से पहले बड़े लाड–प्यार में पले थे। उनके माँ–बाप क़ीमती से क़ीमती कपड़ा उनको पहनाते थे। ख़ुदा ने उनको इस्लाम की तौफ़ीक अता की और वह मुसलमासन हों गये। यह देखकर कि लड़के ने अपना आबायी (पैतृक) मज़हब छोड़ दिया है, माँ–बाप की मुहब्बत एकदम अदावत में बदल गयी। एक दफ़ा वह आंहज़रत सल्ल० के पास इस हालत में आये कि वह जिस्म (शरीर) जो क़ीमती कपड़ों में ढका रहता था उस पर पैबन्द से एक कपड़ा सालिम न था। यह देखकर आप सल्ल० की आँखों में आँसू भर आये।

एयादत व तअ़ज़ीयत व ग़मख़्वारी

बीमारों की एयादत (बीमार पुर्सी) में दोस्त व दुश्मन, मोमिन व काफ़िर किसी को ख़ुसूसियत हासिल न थी। आंहज़रत सल्ल० बीमार की एयादत का बहुत अच्छी तरह ख़्याल रखते थे। एक यहूदी गुलाम मर्ज़ुलमौत में बीमार

हुआ तो आप एयादत को तशरीफ़ ले गये। (सही बुखारी)। अब्दुल्ला बिन साबित जब बीमार हुए तो आप एयादत को गये। उन पर ग़शी तारी थी। आवाज़ दी वह बेख़बर रहे। फ़रमाया अफ़सोस! अबू रबीअ तुम पर हमारा ज़ोर अब नहीं चलता। यह सुनकर औरतें बेइख़्तियार चीख उठीं और रोने लगीं। लोगों ने रोका। आप ने इरशाद फ़रमाया इस वक़्त रोने दो। मरने के बाद अल्बत्ता रोना नहीं चाहिए। अब्दुल्लाह बिन साबित की लड़की ने कहा, मुझको इनकी शहादत की उम्मीद थी क्योंकि जिहाद के सब सामान तैयार कर लिये थे। आपने फ़रमाया, इनकी नीयत का सवाब मिल चुका। (अबूदाऊद)।

हज़रत जाबिर बीमार हुए तो अगरचः उनका घर फासिले पर था पैदल उनकी एयादत को जाया करते थे। एक दफ़ा वह बीमार हुए तो आप हज़रत अबूबक्र को साथ लेकर पैदल उनकी एयादत को गये। उन पर ग़शी तारी थी। पानी मंगवाकर वजू किया और बचे हुए पानी को उनके मुंह पर छिड़का जाबिर होश में आगये और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! अपना तर्कः किसको दूँ इस पर यह आयत उतरीः—

तर्जुमः "अल्लाह तुम्हारी सन्तान के विषय में तुम्हें आदेश देता है"

एक साहब बीमार हुए। आप कई बार उनकी एयादत को गये। जब उन्होंने इन्तेक़ाल किया तो लोगों ने इस ख़्याल से कि अन्धेरी रात है आप को तकलीफ होगी, खबर न की और दफ़न कर दिया। सुबह को मालूम हुआ तो आपने शिकायत की और क़ब्र पर जाकर नमासज़ जनाज़ः पढ़ी। (बुखारी)

अब्दुल्लाह बिन अमरू ने ग़ज़व—ए—ओहद में शहादत पायी थी और काफ़िरों ने उनके हाथ पैर काट डाले थे। उनकी लाश आंहज़रत सल्ल० के सामने लाकर रखी गयी और उस पर चादर डाल दी गयी, उनके बेटे आये और जोशे मुहब्बत में चाहा कि कपड़ा उठाकर देखें। हाज़िरीन ने रोका। उन्होंने दोबारा हाथ बढ़ाया। लोगों ने फिर रोक दिया। आंहज़रत सल्ल० ने दर्द पिदरी के ख़्याल से हुक्म दिया कि चादर उठा दी जाये। चादर का उठाना था कि अब्दुल्ला की बहन बेइख़्तियार चिल्ला उठीं। आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया रोने की बात नहीं फरिश्ते उनको अपने परों के साये में ले गये। (बुखारी)।

एक दफ़ा हज़रत सअद बिन एबादा बीमार हुए। आप एयादत को तशरीफ़ ले गये। उनको देखकर आप पर रिक्क़त तारी हुई और आँखों से आँसू निकल आये। आपको रोना देखकर सब रो पड़े। (बुखारी)।

एक हब्शी मस्जिद में झाड़ू दिया करता था। मर गया तो लोगों ने आप को ख़बर न की। एक दिन आपने उनका हाल पूछा। लोगों ने कहा वह इन्तेक़ाल कर गया। इरशाद फ़रमाया कि तुम ने मुझ को खबर न की। लोगों ने उस को नीच बताया। (यानी वह इस क़ाबिल न था कि आप की उस के मरने की ख़बर की जाती)। आपने लोगों से उसकी क़ब्र दरियाफ़्त की और जाकर जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी। (बुखारी)।

जनाज़ा जाता तो आप खड़े हो जाते। बुखारी में बयान है कि आप ने फ़रमाया कि जनाज़ः जाता हो तो उस के साथ जाओ। वरना कम से कम खड़े हो जाओ और उस वक़्त तक खड़े राहे कि सामने से निकल जाये। (बुख़ारी)। अगरचे आप बहुत ही रक़ीकुल क़ल्ब थे, ख़ासकर अज़ीज़ों की वफ़ात का आपको बहुत दुख होता था फिर भी मातम और नौहः को बहुत नापसन्द फ़रमाते थे। हज़रत जाफ़र को आप बहुत मुहब्बत करते थे। जब उनकी शहादत की ख़बर आई तो आप मजलिसे मातम में बैठे। इसी हालत में किसी ने आकंर कहा कि जाफ़र की औरतें रो रही हैं। आपने फ़रमाया जाकर मना कर दो। वह गये और वापस आकर कहा मैं ने मना किया लेकिन वह बाज़ नहीं आईं। आपने दोबारा मना करा भेजा। फिर भी वह बाज़ नहीं आईं। तीबारा मना करने पर भी जब वह बाज़ न आईं तो फ़रमाया कि जाकर उन के मुंह में ख़ाक डाल दो। (बुखारी)।

लुत्फ़े तबअ (मनोविनोद)

कभी कभी ज़राफ़त (हँसी, ठठोल) की बातें फ़रमाते। एक दफ़ा अनस को पुकारा तो फ़रमाया, "ओ कान वाले"। इस में यह बात भी थी कि हज़रत अनस बड़े आज्ञाकारी थे और हर समय आप सल्ल० के इरशाद पर कान लगाये रखते थे। हज़रत अनस के छोटे भाई का नाम अबू उमैर था वह छोटे थे और एक ममोला (एक पक्षी) पाल रखा था कि इत्तेफ़ाक से वह मर गया। अबू उमैर को बहुत रंज हुआ। आप ने उनको दुखी देखा तो फ़रमाया 'अबू उमैर! तुम्हारे ममोले ने क्या किया'।

एक व्यक्ति ने आपकी सेवा में आकर अर्ज़ की कि मुझको कोई सवारी इनायत हो। इरशाद हुआ कि मैं तुम को ऊँटनी का बच्चा दूँगा। उन्होंने

कहा या रसूलुल्लाह! मैं ऊँटनी का बच्चा लेकर क्या करूँगा? आपने फ़रमाया कि कोई ऊँट ऐसा भी होता है जो ऊँटनी का बच्चा न हो।

एक बुढ़िया आपके पास आई कि हुज़ूर! मेरे लिए दुआ फ़रमाये कि मुझको जन्नत नसीब हो। आपने फ़रमाया बूढ़ियाँ जन्नत में न जायेंगी। उसको बहुत दुख हुआ और रोती हुई वापस चली। आपने सहाबा से फ़रमाया कि उससे कहा दो कि बूढ़ियाँ जन्नत में जायेंगी मगकर जवान होकर जायेंगी। (तिरमिज़ी)

एक बदवी सहाबी थे जिनका नाम ज़ाहिर था। वह धात की चीज़ें आपको भेंट स्वरूप भेजा करते थे। एक दफ़ा वह शहर में आये। गाँव से जो चीज़ें लाये थे उन को बाज़ार में बेच रहे थे। इत्तेफ़ाक़न आप उधर से गुज़रे। ज़ाहिर के पीछे जाकर उनको गोद में दबा लिया। उन्होंने कहा कौन है छोड़ दो, मुड़कर देखा तो सरवरे आलम थे। अपनी पीठ और आंहज़रत सल्ल० के सीने से लिपटा दी। आप ने फ़रमाया कोई इस गुलाम को ख़रीदता है? बोले कि या रसूलुल्लाह! मुझ जैसे गुलाम को जो व्यक्ति खरीदेगा नुक़सान उठायेगा। आपने फ़रमाया, लेकिन ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारे दाम ज़ियादा हैं। (तिरमिज़ी)।

एक व्यक्ति ने आकर शिकायत की कि मेरे भाई के पेट में भारीपन है। फ़रमाया शहद पिलाओ। वह दोबारा आये कि शहद पिलाया लेकिन शिकायत अब भी बाक़ी है। आपने फिर शहद पिलाने को कहा, तिबारा आये। फिर वहीं जवाब मिला। चौथी बार आये तो फ़रमाया कि खुदा सच्चा है (कि शहद में शिफ़ा है) लेकिन तुम्हारे भाई का पेट झूठा है। जाकर शहद पिलाओ। अबकी बार पिलाया तो शिफ़ा हो गयी। (बुखारी)। पेट में दूषित वायु (माद्दये फ़ासिद) बहुत थी जब पूरा साफ हो गया तो भारीपन जाता रहा।

औलाद से मुहब्बत

औलाद से बहुत मुहब्बत थी। मामूल था कि जब कभी सफ़र फ़रमाते तो सबसे आख़िर में हज़रत फ़ातिमा के पास जाते और सफ़र से वापस आते तो जो सबसे पहले आपके पास आता वह भी हज़रत फ़ातिमा ही होतीं। एक दफ़ा किसी ग़ज़वा में गये। इसी बीच हज़रत फ़ातिमा ने दोनों बेटों के लिए चाँदी के कंगन बनवाये और दरवाज़े पर पर्दे लटकाये। आप सल्ल० वापस तशरीफ़ लाये तो ख़िलाफ मामूल हज़रत फ़ातिमा के घर नहीं गये। वह समझ गयीं। फ़ौरन पर्दों को फाड़ डाला और बेटों के हाथ से कंगन उतार लिये। बेटे (हज़रत हसन व हुसैन) रोते हुए आप सल्ल० के पास आये। आपने कंगन लेकर बाज़ार में भेज दिये कि इनके बदले हाथी दाँत के कंगन ला दो। हज़रत फ़ातिमा जब आपके पास आतीं तो आप खड़े हो जाते उनका माथा चूमते और अपने बैठने की जगह से हटकर अपनी जगह बिठाते।

अबू क़ुतादः का बयान है कि हम लोग मस्जिदे नबवी में हाज़िर थे कि अचानक रसूलुल्लाह सल्ल० ओमामा (नेवासी थी) को कन्धे पर चढ़ाये हुए तशरीफ़ लाये और इसी हालत में नमाज़ पढ़इई जब रुकूअ में जाते तो उनको उतार देते। फिर खड़े होते तो चढ़ा लेते। इसी तरह पूरी नमाज़ अदा की। (नसई)

हज़रत अनस कहते हैं कि मैंने किसी को अपने ख़ानदान से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जिस क़द्र आप करते थे। आपके बेटे हज़रत इब्राहीम अवाली में परवरिश पाते थे जो मदीना से तीन चार मील है उनके देखने के लिए मदीना से पैदल जाते थे। घर में धुवां होता रहता था। घर में जाते। बच्चे को अन्ना के हाथ से ले लेते और मुंह चूमते। फिर मदीना को वापस आते। (मुस्लिम)

एक दफ़ा अक़रम हाबिस अरब के एक रईस आपके पास आये। आप हज़रत इमाम हुसैन का मुंह चूम रहे थे। अर्ज़ की कि मेरे दस बच्चे हैं। मैंने कभी किसी को बोसा नहीं दिया। इरशाद फ़रमाया कि जो औरों पर रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता (यानी ख़ुदा उस पर रहम नहीं करता)।

हज़रत हुसैन से बहुत मुहब्बत थी, फ़रमाते थे कि मेरे गुलदस्ते हैं। हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते कि मेरे बच्चे को लाना। वह बेटों को लातीं। आप उनको चूमते और सीना से लिपटाते। एक दफ़ा मस्जिद में ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे। इत्तेफ़ाक़ से हसनैन रज़ि० लाल कपड़े पहने हुए आये। कम उम्री के सबब हम क़दम पर लड़खड़ाते जाते थे। आप ज़ब्त न कर सके। मेंबर से उतर कर गोद में उठा लिया और अपने सामने बिठा लिया। फिर फ़रमाया ख़ुदा ने सच कहा है :–

तर्जुमः "तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान तो केवल एक आज़माइश है।"

फ़रमाया करते थे, हुसैन मेरा है और मैं हुसैन का हूँ। ख़ुदा उससे मुहब्बत रखे जो हुसैन से मुहब्बत रखता

है। एक दफ़ा इमाम हसन या हुसैन आपके कंधे पर सवार थे। किसी ने कहा क्या सवारी हाथ आई है। आप ने फ़रमाया, सवार भी कैसा है? एक दफ़ा इमाम हसन या इमाम हुसैन आप के क़दम पर क़दम रख कर खड़े थे। आपने फ़रमाया, ऊपर चढ़ आओ। उन्होंने आप के सीने पर क़दम रख दिये। आप ने मुंह चूमकर फ़रमाया, ऐ खुदा! मैं इससे मुहब्बत रखता हूँ तू भी रख। (बुखारी)

एक दफ़ा आप कहीं दावत में जा रहे थे। इमाम हुसैन रज़ि० राह में खेल रहे थे। आपने आगे बढ़कर हाथ फैला दिये वह हंसते हुए पास आ आकर निकल जाते थे। आख़िर में आप ने उन को पकड़ लिया। एक हाथ उनकी थोढी पर और एक सर पर रखकर सीने से लिपटा लिया फिर फ़रमाया, हुसैन मेरा है और मैं इस का। अक्सर इमाम हुसैन रज़ि० को गोद में लेते और उनके मुंह में मुंह डालते और फ़रमाते कि खुदाया! मैं इसको चाहता हूँ और उस को भी चाहता हूँ जो इस को चाहे।

आपके दामाद हज़रत ज़ैनब के शौहर जब बद्र से कैद होकर आये तो फ़िदिया की रक़म अदा न कर सके तो घर कहला भेजा। हज़रत ज़ैनब ने अपने गले का हार भेज दिया। यह वह हार था कि हज़रत ज़ैनब के जहेज़ में हज़रत ख़दीजा ने उन को दिया था। आंहज़रत सल्ल० ने हार देखा तो बेताब हो गये और आँखों से आँसू निकल आये, फिर सहाबा से फ़रमाया कि अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो तो हार ज़ैनब को भेज दूँ। सब ने सहर्ष स्वीकार किया।

हज़रत ज़ैनब की कम उम्र बेटी का नाम ओमामा था। उन से आप को बहुत मुहब्बत थी। आप नमाज़ पढ़ते हुए भी उनको साथ रखतें। जब आप नमाज़ पढ़ते तो वह कन्धे पर सवार हो जाती। रुकूअ के वक़्त आप उनको कन्धे से उतार देते थे। फिर खड़े होते तो वह फिर सवार हो जातीं। बयानात के अल्फ़ाज़ से पता चलता है कि आप ख़ुद उनको कांधों पर बिठा लेते और उतार देते थे, लेकिन इब्न अलकय्यम ने लिखा है कि यह अमल कसीर है, वह खुद सवार हो जाती होंगी और मना न फ़रमाते होंगे।

आपकी एक निवासी हालते निज़अ में थीं (मरजासन्न)। बेटी. ने बुला भेजा। आप तशरीफ़ ले गये तो लड़की इस हालत में आपकी गोद में रख दी गयी। आपने उसकी हालत देखी तो आँखों से आँसू जारी हो गये। हज़रत सअद ने कहा, या रसूलुल्लाह! आप यह क्या कर रहे हैं? आपने फ़रमाया, यह रहम है जिसको ख़ुदा ने अपने बन्दों के दिलों में डाल दिया है। (बुख़ारी)।

हज़रत इब्राहीम की वफ़ात में भी आपने दुखी होकर फ़रमाया था, आँखें आँसू बहा रही हैं, दिल दुखी हो रहा है लेकिन मुंह से हम वही बात कहेंगे जिसको ख़ुदा पसन्द करता है। लेकिन यह मुहब्बत सिर्फ अपने ही आल औलाद के साथ मख़ूसस न थी बल्कि आम तौर से बच्चों से आपकी महब्बत थी। (जारी)

पढ़ो दुरूद पढ़ो मोमिनो दुरूद पढ़ो
जब भी नाम सुनो हुज़ूर का दुरूद पढ़ो
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

सर की बीमारियां

सरसाम (Menigitis)

दिमागी परदों में सूजन हो जाती है, सर में तेज दर्द होता है १०५ से १०६ डिग्री तक बुखार के दौरे पड़ते हैं, मरीज बहकी बहकी बातें करता है, रौशनी बुरी लगती है, कभी मरीज टिकटिकी बांध कर देखता है, दान्तों का पीसना, कै, मतली आदि इसकी खास निशानियां हैं। चेचक, टाइफाइड, निमोनिया, मलेरिया के जरासीम का दिमाग तक पहुंच जाना, दिमाग के पर्दों में दिक (टी.वी.) के जरासीम का असर, खून में जहरीला असर यह सभी बातें सरसाम पैदा कर सकती है। जब सरसाम की निशानियां जाहिर हो जाएं तो मरीज को अन्धेरे में रखें, तेज़ बुखार की हालत में सर पर पट्टी करें और किसी तजरिबे कार डाक्टर से इलाज कराएं।

सक्तः (Apoplexy)

मरीज अचानक बेहोश हो कर गिर पड़ता है, दान्त बन्द हो जाते हैं, सांस खर्राटे से लेता है, हाथ पांव ठंडे हो जाते हैं, कभी आंखें खुली हुई और मरीज एक ही ओर देखता है, खतरनाक मरज है कभी मौत भी हो जाती है। इस का खास सबब खून में जहरीले माद्दे का होना है, गुर्दे की खराबी, सख्त सर्दी या गर्मी, दर्द की जियादती, दिमागी चोट पुराना दर्दे सर, आंख की रौशनी में खराबी, कब्ज रहना, सर चकराने का मरज होना, कान बजना यह सब ऐसी निशानियां हैं जिन से सकता हो सकता है। दो तीन दिन होश न आए तो ब्रेन हैम्ब्रेज से मौत हो जाती है। अगर गुर्दे की खराबी से सकता होता है तो मुंह से पेशाब की बू आती है और ठण्डी हवा आती है। मिर्गी से बेहोश हो तो हाथ पांव में अकड़ने होती है और मुंह से झाग निकलती है चाहिए कि जल्द से जल्द अच्छे डाक्टर से सम्पर्क करें इलाज का इल्म (ज्ञान) न रखने वालों की दवाएं हरगिज न खिलाएं ताकि बअद में पछताना न पड़े।

सोलहवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

बनी अब्बास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

ब्रामक:

ब्रामक: का नाम तो शायद तुमने सुना होगा। बरमक एक ईरानी सरदार था। उसका बेटा खालिद मुसलमान हो गया। बनी उमय्या के ज़माने में खुरासान में अब्बासियों के लिए काम किया गया तो यह भी उसी में शामिल हो गया। जब हुकूमत बनी अब्बासियों को मिली तो सफ़्फ़ाह ने उसे अपना वज़ीर बनाया। मनसूर के ज़माने में भी कुछ दिन उसी पद पर रहा। फिर बाद में मूसल का गवर्नर हो गया।

यहिया बरमकी उसी खालिद का बेटा था। महदी ने उसे हारून का अध्यापक नियुक्त किया और उस समय से बराबर साथ रहा। जब हारून बादशाह हुआ तो बरमकियों की इज़्ज़त बहुत बढ़ गई। धीरे–धीरे वह सारी सलतनत पर छा गए और यह मालूम होने लगा कि शासन की असली बागडोर उन्हीं के हाथ में है। हारून ने यह रंग देखा तो डरा कि बस चन्द ही दिन में हुकूमत बरमकियों की हो जाने वाली है। यह विचार कुछ ऐसा जमा कि उसने यहिया और उसके तीन बेटों– फ़ज़ल, मुहम्मद, और मूसा को कैद कर दिया और चौथे बेटे जाफ़र को क़त्ल करा दिया। इस प्रकार यह मशहूर खान्दान हमेशा के लिए ख़त्म हो गया। २३ वर्षों के शासन के बाद ११२ हिजरी में हारून का देहान्त हो गया। यह बड़ा दीनदार और मज़हब का पक्का था। फ़र्ज़ के अतिरिक्त रोज़ाना सौ रकअ़ते नफिल पढ़ता था। खैर खैरात की कोई सीमा न थी। हज और जिहाद का बड़ा शौक था। शायद ही कोई ऐसा साल गुज़रा हो जो हज या जिहाद से खाली गया हो। मिज़ाज में नर्मी बहुत थी। जरा सी नसीहत की बात सुनता तो आँखों से आँसू बहने लगते। एक बार मशहूर आलिम इब्ने–सम्माक दरबार में बैठे हुए थे। हारून को प्यास लगी। नौकर पानी लाया लेकिन जैसे ही मुंह लगाना चाहा, इब्ने सम्माक ने रोककर पूछा सचसच बताइये अगर यह पानी आपको न मिले तो आप इसके लिए कहाँ तक खर्च कर सकते हैं। हारून ने कहा सारी सलतनत। जब पानी पी चुका तो फिर इब्ने सम्माक ने पूछा अगर यह पानी बदन में रुक जाए और किसी तरह न निकल सके तो इलाज पर आप कितना खर्च कर सकते हैं। हारून ने कहा पूरी सलतनत। यह सुनकर इब्ने सम्माक ने कहा कि जिस बादशाहत की क़ीमत एक गिलास पानी से भी कम है वह हरगिज़ इस योग्य नहीं कि उसके लिए खून का एक बून्द भी बहाया जाए। यह सूनकर हारून इतना रोया कि हिचकी बन्ध गई। हारून ने अपने बाद अमीन और उसके बाद मामून को मुकर्रर किया था और देश का बटवारा करके हुकूमत दोनों में बांट दी थी और वसीयत नामा लिख कर खान–ए–काबा में रखवा दिया था ताकि बाद को कोई झगड़ा बखेड़ा न हो लेकिन कुछ अमीन के स्वभाव की कमज़ोरी और कुछ उसके वज़ीर फ़ज़ल बिन रबीअ़ की शरारत, दोनों भाइयों में निबह न सकी। मामून ने अपनी तरफ से बहुत कोशिश की झगड़ा फसाद न हो लेकिन फ़ज़ल कब मान सकता था। उसने एक नया शोश निकाला। अमीन से कह सुनकर मामून की जगह अमीन के बेटे मूसा को उत्तराधिकारी (वलीअहद) मुकर्रर करा दिया और काबा शरीफ से सारी दस्तावेज़ें मंगाकर फाड़ डालीं फिर लुत्फ़ यह कि मामून को बैअ़त के लिए लिखा।

अब मुआमला हद से बाहर हो चुका था। मामून को बहुत क्रोध आया और उसने अपने वज़ीर फ़ज़ल बिन सहल की सलाह से जंग की तैयारी शुरू कर दी और ताहिर बिन हसन की मातहती में एक लशकर रवाना कर दिया। इधर फ़ज़ल बिन रबीअ़ ने अली बिन ईसा को पचास हज़ार फ़ौज देकर भेजा। रे के निकट दोनों का मुकाबला हुआ जिसमें अली बिन ईसा मारा गया। ताहिर ने दरबार में सफ़लता की सूचना दी। फ़ज़ल बिन सहल ने मामून को यह खबर सुनाई और नियमानुसार खिलाफ़त का एलान किया।

इसके बाद बाग़ी फ़ौज़ों से कई जंगें हुईं लेकिन सबमें ताहिर को विजय हुई। आखिर मामून के हुक्म से एक तरफ से ताहिर और दूसरी तरफ से

हरसमा ने बढ़कर बग़दाद को घेर लिया अब अमीन बिल्कुल असमर्थ था लेकिन करता क्या। ताहिर से तो कोई आशा थी ही नहीं अतः हरसमा की पनाह (संरक्षण) में आना चाहा। हरसमा भी इसके लिए तैयार था लेकिन ताहिर के आदमियों ने रास्ते ही में बन्दी बना लिया और उसके आदेश से क़त्ल कर दिया। यह घटना २५ मुहर्रम सन १९८ हि० में पेश आई।

मामून

अमीन के कत्ल के बाद सारा देश मामून के कब्जे में आ गया। ऊपर बयान किया गया है कि मामून का सबसे बड़ा मददगार फ़ज़ल बिन सहल था। यह एक ईरानी नस्ल का आदमी था। इसलिए इस सफलता के बाद ईरानियों और खुरासानियों का प्रभाव बहुत बढ़ गया। यहाँ तक कि बग़दाद के बजाय मामून मरू (खुरासान का एक शहर) ही में रहने लगा। अरबों को यह बात नागवार हुई और सारे देश में हलचल मच गई।

यहया बरमकी के साथ होने से मामून पहले ही अलवियों का विरोधी न था। फज़ल बिन सहल ने इस असर को और बढ़ा दिया और खुलम खुल्ला अलवियों की तरफ़दारी करने लगा यहाँ तक कि अब्बासी काले रंग के बजाय हरे अलवी कपड़े पहनने शुरू किये। इमाम अली रज़ा के साथ अपनी लड़की ब्याह दी और उन्हें अपना उत्तराधिकारी (वलीअहद) मुकर्रर कर दिया। अब्बासी यह रंग देखकर भड़के और समझे कि अब सलतनत हाथ से गई। उन्होंने मामून के चचा इब्राहीम को बादशाह बना दिया।

अभी अमीन की जंग का असर मिटा न था कि यह और गड़बड़ मची। नतीजा यह हुआ कि सारे देश में अव्यवस्था फैलनी शुरू हो गई और जगह–जगह फ़साद होने लगे। इधर तो सारे देश में यह आफ़त मची हुई थी और उधर मामून को कानों कान खबर न थी। फ़ज़ल ने अपनी बदनामी के ख़्याल से अब तक सब कुछ छुपा रखा था। अगर कुछ दिन और यही हालत रहती तो मामून का किस्सा ख़त्म था लेकिन अली रज़ा ने साहस करके सब कुछ सुना दिया। मामून तो पहले चकराया लेकिन जब और सरदारों से भी यही मालूम हुआ तो आंखें खुल गईं।

अब मामून तुरंत बगदाद की तरफ़ रवाना हुआ संयोग से रास्ते में इमाम अली रज़ा और फ़ज़ल बिन सहल का देहान्त हो गया। अब विरोध का कोई कारण न था। बग़दाद पहुँचते पहुँचते सारे झगड़े समाप्त हो गए और मामून ने सिरे से हुकूमत पाई। उसके बाद देश में शान्ति रही।

स० २१८ हिजरी में मामून का निधन हुआ। यह बड़ा जबरदस्त आलिम (विद्वान) और आलिमों की बड़ी क़द्र करता था। उसने शिक्षा के प्रसार में बड़ी कोशिश की। शिक्षा के प्रसार के लिए बड़े–बड़े विद्वान नौकर रखे। पुस्तकालय और मदरसे क़ायम किये। विद्यार्थियों के लिए वज़ीफ़े मुकर्रर किये। शिक्षा के प्रचार व प्रसार में हज़ारों रुपये खर्च करता था। उसकी कोशिश से बग़दाद में हर तरफ विद्वानों की भीड़ लग गई। हर जगह इल्म ही की चर्चा सुनाई देने लगी और बग़दाद सारी दुन्या का उस्ताद बन गया मगर उसके ज़मानेमें एक बड़ी खराबी यह हुई कि सारी हुकूमत ईरानियों के हाथ में आ गई।

हूकूमते जियादियः, अग़ालबः और ताहिरियः

हारून के हालात में अफरीका की इदरीसी हुकूमत का बयान आप पढ़ चुके हैं। मामून के ज़माने में अफरीका, यमन और खुरासान में अग़ालबः, ज़ियादियः, और ताहिरियः तीन और नई हुकूमतें कायम हो गईं। यह अपने मामलात में पूरी आज़ाद थीं। केवल अब्बासियों को कुछ रक़म कर के रूप में देती थीं और सिक्का और खुतबा (व्याख़्यान) में उनका नाम रखती थीं।

मुअ़तसिम

मामून के बाद उसका भाई मुअ़तसिम तख़्त पर बैठा। यह अगरचः पढ़ा लिखा बिल्कुल न था लेकिन बड़ा बहादुर और बहुत अच्छा शासक था। उस के समय में देश के अन्दर काफी शान्ति रही। रूमियों से अलबत्ता बड़ी–बड़ी लड़ाइयाँ हुईं जिन में मुसलमानों की विजय हुई।

उन दिनों रूमी अपनी सीमा से बढ़ गए और मुसलमानी शहरों पर हमला करके मुसलमानों को पकड़–पकड़कर उनकी आंखों में नील की सलाई फेरते और न जाने क्या क्या कष्ट देते। एक बार एक नगर पर हमला करके मुसलमान औरतों को पकड़ ले गए। उनमें मुअ़तसिम के खान्दान की भी औरत थी। यह चिल्लाई मुअ़तसिम मदद के लिए दौड़ो। मुअतसिम को इसकी सूचना मिली तो उसको बड़ा दुख हुआ और एक बहुत बड़ी फौज लेकर रूमियों पर चढ़ गया और अच्छी तरह उनकी मरम्मत करके दुरुस्त कर

दिया।

पहले आप पढ़ चुके हैं कि अब्बासी हुकूमत पर शुरू ही से ईरानी असर था। मामून के समय में यह असर और बढ़ा और लगभग सारे पद अरबों से निकलकर ईरानियों के हाथ में आ गए। मुअतसिम ने इस असर को मिटाने के लिए तुर्कों (यह तुर्की के लोग न थे यह और लोग थे) को आगे बढ़ाना शुरू किया लेकिन यह उस से भी बड़ी गलती थी। अरब पहले ही अलग हो चुके थे, ईरानी अब हटो फलतः हुकूमत अब बिल्कुल तुर्कों के हाथ में आ गई और उनके लिए उसने एक नया शहर सामरा बसाया। यही राजधानी भी हो गया।

आखीर में मुअतसिम को खुद अफसोस हुआ लेकिन मामला हाथ से निकल चुका था। अब क्या कर सकता था। तुर्कों का प्रभाव बढ़ता ही रहा और आगे चलकर अब्बासी बादशाह उनके हाथ में कठपुतली होकर रह गया। सन २२७ हिजरी में मुअतसिम का देहान्त हो गया। मुवक्किल इतना ताक़तवर और बहादुर था कि रुपये का चित्र उंगलियों से मलकर मिटा देता था और बोझ लादने वाले जानवरों को बोझ समेत उठा लेता था। (जारी)

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

(पृष्ठ ४ का शेष)

व मुआमलात वग़ैरह के मसाइल निकालकर उम्मत पर एहसान किया और शरीअत पर चलना आसान किया, इसी तरह इस्लाहि बातिन (यअनी तसव्वुफ़ के इमामों ने किताब व सुन्नत की मदद से अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत पैदा करने और पुख़्ता करने, अख़्लाक़ की ख़राबियां घमंड, कीना, बुख़्ल व तअस्सुब वग़ैरह दूर करने अख़लाक़ी भलाइयाँ, इख़्लास, सच्चाई सख़ावत वग़ैरह पैदा करने के तरीक़े निकाले।

जिस तरह फ़िक़्ह के चार तरीक़े हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ओ हंबली मशहूर हैं उसी तरह तसव्वुफ़ के भी चार तरीक़े चिश्ती, क़ादिरी नक़्शबन्दी और सुहर वर्दी मशहूर हैं। चिश्ती की निस्बत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (अजमेरी) क़ादिरी का तअल्लुक़ शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, नक़्श बन्दी का तअल्लुक़ ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द से और सुहर वर्दी की निस्बत शैख़ शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी से है। इनमें से हर एक की निसबत हदीस की सनद की तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व बसल्लम से जुड़ी हुई है। इन बुज़ुर्गों के बअद इन के खुलफ़ा फिर उन के ख़ुलफ़ा के ज़रीअे शाख़ दर शाख़ होती चली गईं। ''करामातुल औलियाइ हक़्कुन्'' जिस तरह नबी से मुअजिज़ा उनकी तस्दीक़ के लिये ज़ाहिर होता है उसी तरह कभी–कभी अल्लाह के वली से ख़िलाफ़ आदत बात (अनियमी घटना) ज़ाहिर होती है इस को करामत कहते हैं लेकिन हर वली से करामत का ज़ाहिर होना ज़रूरी नहीं है। करामत वली की पहचान नहीं उसकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिये होती है सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) से अनगिनत करामात ज़ाहिर हुईं लेकिन अफ़सोस बअज़ गप्पियों ने लोगों को ख़ुश करने के लिये उनकी गढ़ी करामतें भी छाप रखी हैं।

अल्लाह तआला हमको अपनी, अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत के साथ तमाम औलियाउल्लाह की महब्बत भी नसीब फ़रमाए।

(पृष्ठ ८ का शेष)

क़ुर्ब और विलायत हासिल करने में नमाज़ को जो दर्जा हासिल है वह पूरे निज़ामे शरीअत में किसी और चीज़ को नहीं। इसके ज़रिये इस उम्मत के मुजाहिदीन हर नस्ल और हर दौर में क़ुर्ब व विलायत के उन दरजात तक पहुंच गये जहां बुद्धिमानों की बुद्धि नहीं पहुँच सकती। नमाज नुबूवत की मीरास है जो अपने तमाम आदाब व अहकाम के साथ बहिफ़ाज़त एक नसल से दूसरी नसल और एक अहद से दूसरे अहद तक पहुँचाती रही।

नमाज़ अल्लाह के रसूल स० की महबूब व पसन्दीदा इबादत थी इससे आप को सुकून व तसल्ली हासिल होती थी। आप फ़रमाते थे, ''मेरी आँखों की ठन्डक नमाज़ में है।'' आप अपने मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल र० से फ़रमाते, ''बिलाल नमाज़ खड़ी करो, और हमें इससे आराम पहुँचाओ''। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी० से रिवायत है कि आप को जब कोई परेशानी की बात पेश आती फ़ौरन नमाज़ के लिए खड़े हो जाते। आपकी नमाज़ ''एहसान'' का मुकम्मल और आला नमूना थी। आप से ''एहसान'' के मानी पूछे गये तो आपने फ़रमायाः–

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला की इबादत इस तरह करो जैसे कि तुम उसको देख रहे हो और अगर तुम उसको देख नहीं रहे हो तो वह तो तुम्हे देख रहा है''।

और यही वह नमाज़ है जो हर मुसलमान से मतलूब है। आपने फ़रमाया, ''उसी तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह तुम मुझको नमाज़ पढ़ते हुए देखते हो''।

क़िस्त तीन

निरन्तर विपत्तियों तथा मुसीबतों का आक्रमण

कारण और इलाज

शमसुल हक नदवी

इंसान जब सो रहता है तो उसकी अक्ल व चेतना की शक्तियाँ भी अपना काम छोड़ देती हैं। इंसान मुर्दा समान हो जाता है। इस सूरत में साने वाला कभी भी दुर्घटना का शिकार हो सकता है। कान नाक में कोई कीड़ा चला जाये, सांप बिच्छू डस ले, दुश्मन क़त्ल कर दे, कुछ भूतप्रेत का प्रभाव हो जाए। आप (सल्ल०) ने फरमाया जब सोने लगो तो यह दुआ पढ़ लिया करो। इस तरह अपने को ख़ुदा के हवाले करके सोया करो। फरमाया–

अनुवाद– "ऐ अल्लाह! मैं ने अपना रुख़ तेरी तरफ कर दिया और अपना मामला तुझे सुपुर्द कर दिया और अपनी पीठ तेरी तरफ़ रख दी, तेरी इच्छा और भय से तेरे सिवा कोई ठिकाना और पनाह नहीं। मैं तेरी इस किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी और उस नबी पर जिसको तूने भेजा।"

जब बन्दा दुआ करके सोएगा तो खुदा की हिफ़ाज़त में रहेगा और जब सोकर उठे तो अपने दयालु आक़ा की प्रशंसा का बखान करे कि उसने द्वन्द्व (शर) से सुरक्षित रखा। फिर से नई जिन्दगी प्रदान की क्योंकि सोने की दशा में इंसान मानो मुर्दा ही होता है। अतएव कहे–

अनुवाद– "उस ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमें मरने के बाद जिलाया और उसी की तरफ उठकर जाना है।"

जब सुबह का तड़ा होता है तो इंसानी जिन्दगी की चलत फिरत और कारोबार की घमा घमी शुरू हो जाती है। आने जाने में खतरा, किसी बला, मुसीबत में पँड़ जाने का खतरा किसी गुनाह व पाप में ग्रस्त हो जाने का डर। फरमाया जब सुबह हो अपने रब से दुआ मांग लिया करो–

अनुवाद– "हमने और मुल्क ने अल्लाह के लिए सुबह की। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस दिन की खैर, फतह, नूर व बरकत और हिदाय (निर्देश) मांगता हूँ और इस दिन के द्वन्द्व से तरी पनाह मांगता हूँ।

यहाँ इन दुओं का ज़िक्र किया गया है जो विभिन्न समय में हिफ़ाज़त के लिए मांगी जाती हैं। हिफाजत और सलामती की और बहुत सी दुआएँ हैं जिनको मांगना चाहिए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः– जो शख़्स सूरतुल इख़्लास (कुल हुवल्लाहु अहद पूरी) सुरतुल फलक़ (कुल अऊजुबेरब्बिल फ़लक पूरी) सुरतुन्नास (कुल अऊजुबेरब्बिन्नास पूरी) तीनों सूरतों को सुबह शाम तीन–तीन बार पढ़ लिया करे, वह हर प्रकार के खतरे से महफूज़ रहेगा इंशाअल्लाह। हज़रत उसमान (रज़ि०) फरमाते हैं कि रसूल सल्ल० ने फरमाया कि जो बन्दा हर सुबह शाम तीन मरतबा यह कलमात पढ़े तो उसे कोई चीज़ हानि न पहुंचाएगी और कोई नागहानी बला न पहुंचेगी। बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिही शैउन् फ़िल् अर्ज़ि फ़िस्माअ वहुवस्समीअुल् अलीम

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं आप सल्ल० की सेवा में लगा रहता था और अति अधिक आप सल्ल० को यह दुआ करते सुनता था–

अनुवाद– "ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ चिन्ता से और दुःख से और कम हिम्मती और काहिली और बुज़दिली (कायरता) से और कंजूसी और कर्ज़ के बोझ से लोगों के दबाव से।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) खुदा की दी हुई नेअ़मतों (सुख–सामग्री) बक़ा (स्थायित्व) और सेहत व कुशल मंगल की दुआ मांगते और अचानक सजा व पकड़ से पनाह मांगा करते थे।

आप सल्ल० फरमाते –

अनुवाद– "ऐ मेरे अल्लाह! मैं आप की नेअ़मतों के ख़त्म हो जाने आप की आफियत (कुशलमंगल) के सल्ब (हरण) हो जाने आप के अचानक ग़ज़ब से और आपकी तमाम नाराज़ियों से आपकी पनाह चाहता हूँ।"

एक दूसरी दुआ इस तरह फरमाई–

अनुवाद– "ऐ अल्लाह! मैं पनाह चाहता हूँ दबकर, गिरकर, डूबकर, जल कर मरने से और बहुत ज़ियादा बुढ़ापे से" हमार हाल यह है कि नेअ़मत व आफ़ियत (कुशल) की प्राप्ति के बाद अकड़ते और इतराते हैं और उसको

अपनी अक्ल व योग्यता का फल समझते हैं। उसकी स्थिरता की दुआ करना तो अलग रहा, शुक्र भी अदा नहीं करते। फिर अगर कोई आफत आती है तो उससे बचाव क्यों कर हो। दुआओं का आयोजन और उसका शौक़ खुद खुदावन्दी की दलील है। हदीस शरीफ में आता है आप (सल्ल०) ने फरमाया दुआ इबादत का मग़्ज़ है....। नोट : बेहतर होगा कि यह दुआएँ दुआओं की किताब से अरबी में याद कर के अपने नबी (स०) की ज़बान में मांगी जाएं।

आका जब अपने बन्दों पर दया करना चाहता है तो उनको दुआ करने का ढंग प्रदान कर देता है और फिर यह दुआ जीवन की समस्याओं से जूझने का साहस बख्शती है। अल्लाह तआला पर भरोसा बढ़ता है और उसके साथ कार्य करने की शक्ति भी जागती है। दुआ उन बुरे कामों से बचने के लिए ढाल का काम करती है जो दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। अतः हमको चाहिये कि दुआओं के ज़रिये अल्लाह तआला के शरण में आ जाएं। अब तक जो कुछ कहा गया है अमन व शान्ति की तलब, अचानक आपड़ने वाली आफ़त, बेबसी व बेकसी, कंजूसी और काहिली से हिफ़ाज़त व तलब की गुज़ारिश (आवेदन) का ज़िक्र अपने आक़ा से है।

हमें यह याद रखना चाहिये कि जिस तरह चीज़े, दवाएं और आहारों के प्रभाव होते हैं उसी प्रकार कर्मों के भी प्रभाव होते हैं। बुरे कर्मों के प्रभाव बेबरकती घरेलू झगड़ों, बीमारियों, बलाओं और आफतों की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं और अच्छे कर्मों के प्रभाव, ख़ैरोबरकत, अमन शान्ति, संतोष व इत्मिनान और अच्छाई की क्षमता (तौफ़ीक़) की सूरत में ज़ाहिर होते हैं। अतः हर समय अपनी जांच पड़ताल व समीक्षा लेते रहना चाहिये कि हम कोई गलत काम तो नहीं कर रहे हैं। अत्याचार ज़ियादती, अन्याय, आपसी सम्बन्ध तोड़ने, बुरे व्यवहार, कुकर्म और बेहयाई से अपने को बचाना चाहिये कि इन सब कर्मों के परिणाम आफतों और मुसीबतों की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं। जिसको हम इस समय देख रहे हैं।

महब्बत, भाईचारगी, ईमानदारी, स्तयवादयता, इंसाफ़, सच्चाई इस्लाम की पहचान है। यह कर्म, कुशलमंगल, स्वास्थ, अमन चैन संतोष और सुख तथा बलाओं, आफतों से हिफ़ाज़त का सामान बनते हैं। जिनसे हम इस समय वंचित हैं। इसकी रोशनी में हमको दूसरे अवसरों की जो दुआएं बयान की गई हैं उनको पढ़ना चाहिए कि यही मोमिन की शान हैं और ईमान का तकाज़ा है। अगर हम ऐसा करेरंगे तो अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त के ग़ैबी (अलौकिक) इन्तिजाम फरमाएगा। इतिहास में इसकी हज़ारों मिसालें हैं। नमूने के तौर पर एक घटना का ज़िक्र करता हूँ कि इस संक्षिप्त मज़मून की ज़ियादा की गुंजाइश नहीं है। हज़रत सफीना (रज़ि०) रुमियों की लड़ाई या किसी दूसरे अवसर पर रास्ता भूल गए। अचानक एक शेर सामने आ गया। उन्होंने इस शेर से फरमाया : मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुलाम हूँ। मैं रास्ता भूल गया हूँ। इसके बाद वह शेर कुत्ते की तरह दुम हिलाता हुआ उनके साथ हो लिया जहाँ कोई खतरे की बात पेश आती वह दोड़कर उस तरफ जाता और पलटकर फिर उन के पास आ जाता और उसी तरह दुम हिलाता हुआ साथ चलता यहाँ तक कि लश्कर तक उन को पहुँचाकर वापस चला गया।

सदाचारी और नेक बन्दों के साथ यह घटनाएँ बराबर पेश आती रहती हैं और अब भी पेश आती हैं। दयावान रब और नबी की ज़बान ने जो कुछ फरमा दिया है उस में सन्देह की गुंजाइश ही क्या और इतिहास इसका गवाह है। अल्लाह तआला हमको अपनी मर्ज़ी पर चलने की तौफ़ीक़ (क्षमता) दे और हमारी गलतियों को क्षमा करके आफतों, बलाओं से हमारी सुरक्षा करे। सारांश यह कि ख़ुदा को पुकारे बिना उससे लौ लगाए बग़ैर इंसान का कहीं ठिकाना नहीं। निम्नलिखित आयत में कुर्आन मजीद ने इस सच्चाई को बयान किया है। पढ़िये कुर्आन क्या कहता है :–

अनुवाद– "कह दो कि अगर तुम (ख़ुदा को) नहीं पुकारते तो मेरा पालनहार भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता।" फिर फरमाता है–

अनुवाद– "मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा।"

यह सच है कि आक़ा खुद हमारी फरयाद को अपने कानों से सुन रहा है। मोमिन के लिए शुभ समाचार है–

इससे बढ़कर और क्या मेरे लिया इनआम है।

आप ख़ुद सुनते हैं आकर जो मेरा पैग़ाम है।। (मो० सुलैमान नदवी रह०)

अन्त में संक्षेप में बयान किया जाता है कि इस दुन्या को अल्लाह तआला ने दारुल असबाब (कारण

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हमारी समस्याओं की जड़

और

दावते दीन से ग़फ़लत

अमीनुद्दीन शुजाउद्दीन

यह युग सूचना इंक़लाब का युग है जो न केवल हमारी चौखट तक आ चुका है बल्कि हमारे घरों में दाखिल हो चुका है। उसके अप्रिय और नकारात्मक प्रभाव पूरे समाज पर पड़ रहे हैं और उर्यानियत (नग्नता) और निर्लज्जता का इतना चलन हो चुका है कि संचार माध्यम की दूसरी चीज़ें तो अलग रहीं आलम यह है कि एक समाचार पत्र भी ऐसा नहीं रहा कि शरीफ़ घराने उसे बेफिक्री के साथ अपने घरों में जारी करा सकें। बुराई की एक बाढ़ सी आ गई है जो नैतिकता (अख़लाक़) के एक एक बान्ध को बहाए लिए चली जा रही है और थमने का नाम नहीं लेती। अपराधों का ग्राफ़ बढ़ता ही जा रहा है। इस सूरत हाल में हमारे सामने केवल दो रास्ते हैं। या तो घास फूस के समान अपने को इस बाढ़ के हवाले कर दें या उम्मते ख़ैर (भलाई क़ायम करने वाला समुदाय) होने का सबूत देते हुए इसके लिए सर जोड़कर बैठें।

जहाँ तक संचार माध्यमों का प्रश्न है तो वास्तव में वह मासूम होते हैं और यह उनके अच्छे और बुरे इस्तेमाल पर निर्भर है कि वह किस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल हो रहे हैं। यह सोचना कि समाज की अंतरात्मा मर चुकी है सही नहीं है। अल्हम्दुलिल्लाहि मुसलमानों के अतिरिक्त गैर–मुस्लिम पड़ोसियों में भी बहुत से लोग ऐसे मिलेंगे जो निर्लज्जता के सैलाब से चिन्तित और बेचैन हैं ऐसी सूरत में संचार माध्यमों के ज़हर को कम करने के लिए हमें वैकल्पिक व्यवस्था (मुतबादिल निज़ाम) करनी चाहिए। देश के अनदर और बाहरी देशों में दावती (सत्य के प्रसार व प्रचार) काम कुछ हुआ है और हो रहा है लेकिन इसका कार्यक्षेत्र सीमित है। मगर सन्तोष की बात यह है कि पहल हुई तो है। इस अवसर पर नाचीज़ एक बात अर्ज़ करने की इजाज़त चाहता है कि इस निर्लज्जता ओर अश्लीलता से समाज को बचाने के लिए अख़लाक़ी (नैतिक) प्रोग्रामों में ग़ैर–मुस्लिम भाइयों को भी शामिल किया जाए ताकि आम लोगों में दिलचस्पी तो पैदा हो फिर अल्लाह दिलों को फेरने वाला है वही दिलों में बदलाव लाएगा।

संचार माध्यमों में अगर सही लोग आगे नहीं आएंगे तो अन्दरूनी खतरे मुंह फैलाए खड़े हैं। ऐसे प्रभावी और धनवान लोग इस मैदान में आएंगे जो इस्लामी विचारों को पहेली बनाकर पेश करेंगे और इस्लाम को केवल रस्मरिवाज और खुराफात व अन्धविश्वास का मज़हब बनाकर पेश करेंगे और तदबीर उलटी पड़ेगी।

यह बात तो हुई पंथ व मत की लेकिन इससे आगे का मरहला (विकट समस्या) बड़े खतरों से भरा हुआ है। इस्लाम के नाम पर असत्य समुदायों की साज़िशों की समस्या कादयानियत ने संचार माध्यामों के ज़रिया जिन फितनों का जाल बिछा रखा है उस का ज्ञान और पहचान वही लोग कर सकते हैं जो सीधे संचार माध्यमों से जुड़े हैं और उसकी भरपूर जानकारी रखते हैं। धोखा व जालसाज़ी क़ादियानियों की नीति है जिससे वह कमाल होशियारी से काम ले रहे हैं।

एक तरफ तो अल्हम्दुलिल्लाहि इस्लाम को जानने की जिज्ञासा पाई जा रही है और खुले ज़हन के पढ़े लिखे लोगों का एक वर्ग इन्टरनेट और दूसरे संचार माध्यमों से इस प्यास को बुझाना चाहता है लेकिन नित नये मक्कार शिकारी पहले ही ऐसा जाल बिछाए हुए होते हैं कि इस्लाम की सही तस्वीर से आगाह होने के बजाए असत्य धर्म के जाल में फंस जाएं। कितने वेबसाइट और कितने डाटकाम ऐसे हैं जो इस्लाम के नाम से जुड़े हैं जोकि इस्लाम और इस्लाम की जड़ खोद रहे हैं। इसकी ग़लत व्याख्या और तस्वीर पेश कर रहे हैं।

चुनांचि यहाँ समस्या **Authenticity** की है। उन के प्रमाणित होने की है और इसका एक आसान हल यह समझ में आता है कि हम सही विश्वास वाली व प्रमाणित संस्थाएँ आपस में वाद विवाद किये बिना और नये आने वालों को द्विविधा और कनफ्यूजन में डाले बग़ैर बुनियादी इस्लामी आदेशों व शिक्षा सम्बन्धी वेबसाइट ओर डाटकाम खोलें। इस सिलसिले में भी मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि

संस्थाओं और समितियों का परिचय केवल इस हद तक रहे कि उसका प्रमाणिक होना दूरदाराज के दर्शक के लिए काफी हो जाए। असल ध्यान इस्लामी शिक्षा और आदेशों पर दी जाए। सूचना माध्यमों के इंकलाब के रहस्यों व खतरों और अन्देशों से अगर इन दिनों ज़रा सी भी गफलत बरती गई तो खुदा न करे ज़मीन पैरों तले से निकल चुकी होगी। यह तो उनकी बातें हुईं जो बज़ाहिर घर के भेदी हैं और हमेशा से इस्लाम विरोधी तत्वों के सहयोगी बनते आए हैं। इधर उनकी संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है ओर नित नये फितने जगाए जा रहे हैं अलकुफ़्रमिल्लतिवहदत के सिद्धान्त के अन्तर्गत यहूदियों की निगरानी में यह तत्व सरगर्म हैं अब मसला मुसतशरिकीन का ही नहीं रहा बल्कि असत्य अपने पूरे लाव लश्कर के साथ मोरचे पर सरगर्म है। इसमें बज़ाहिर अपने चेहरे भी दिखाई देते हैं। नाम ही के लिहाज़ से सही लेकिन काम होता है दीन के नाम पर ओर नऊज़बिल्लाहि इसके सुधार के नाम पर। दुनिया बड़ी लम्बी चौड़ी है। कितने लोग हैं जिन के ज़हन खाली हैं। क्या यह कल्पना करना केवल भ्रम होगा कि इस्लाम के नाम पर यह गलत प्रोपेगंडा उन लोगों के लिए जिनका ज़हन खाली है या भ्रमित (मशकूक) लोगों को शक में मुब्तिला नहीं करता होगा। इस विशाल संसार में अपना सही सन्देश और सही विचारधारा पहुँचाने का ज़रिया संचार माध्यम ही हैं। दिल मसोसकर रह जाता है कि जिन दिनों अरब की भूमि सोना उगल रही थी और वर्ल्ड आर्डर का प्रचार करने वालों की निगाहों से जिन दिनों वह सुरक्षित थी और शाह फैसल मरहूम इस तरल सोने को हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे, अफसोस कि उन दिनों अरब दुनिया के मार्गदर्शकों (क्यादत) ने सूचना इंकलाब के इन खतरों को रोकने का कोई उपाय नहीं किया चुनांचि आज न हमारी कोई आवाज़ है न संचार एजेन्सियाँ बल्कि समाचारों को जानने के लिए हम उन्हीं यहूदी संचार एजेन्सियों के मुहताज हैं जिनके रगरग में इस्लाम दुश्मनी रचीबसी है।

रहा अमेरिका बहादुर उसके सहयोगी और उसके गोद का बच्चा यहूद की इस्लाम दुश्मन साज़िशें तो जगज़ाहिर हैं। फुर्कानुल हक़ के नाम से जिस किताब का प्रकाशन किया गया है और धोखा देकर इसे कुर्आन का नाम देकर उसे जिस तरह फैलाया जा रहा है और अल्लाह की उतारी हुई किताब पवित्र कुर्आन की अमेरिकी फौजियों द्वारा निहायत दिलेरी के साथ जिस तरह अपमान करके मुसलमानों को जहनी कष्ट पहुँचाया गया है है उससे हर खासोआम अवगत है। फुर्कानुल हक़ नामी निन्दनीय पुस्तक की असलियत और उसके उद्देश्य को भी उजागर करना चाहिये अन्यथा यह गलत शक्तियां, दुनियावी संसाधान इस्लाम और सत्य की तलाश करने वालों को गुमराह (पथभ्रष्ट) करने में किसी न किसी हद तक कामयाब हो जाएंगी।

यह कार्यक्रम तो यही बताते हैं कि इस्लाम को मिटाने और इस्लाम दुश्मनी के लिए जितने योजनाबद्ध (मंसूबाबन्द) और ठोस कोशिशें हुईहैं और हो रही हैं उसके मुकाबले में दीन की दावत के लिए इस क़दर मंसूबा बन्द ठोस कोशिशे नहीं हो सकीं। अलहम्दुलिललाह अल्लाह के बन्दे व पाकबाज़ और दर्दमन्द लोग इस राह में जो कुछ भी टूटी फूटी कोशिशें कर रहे हैं अल्लाह उसमें एख़लास (निःस्वार्थता) और बरकत दे और उनके अच्छे नतीजे हासिल हों।

दावते दीन की राह में एक बड़ी रुकावट जो हमारे हाथों से खड़ी की गई है वह है मस्लकी (पंथवादी) पक्षपात। डा० अमबेडकर के बारे में नहीं मालूम यह कथन कहाँ तक सही हैं लेकिन अनुमान से सत्य प्रतीत होता है कि जिन दिनों वह धर्म की तब्दीली पर गम्भीरता से गौर कर रहे थे और जब कुछ दर्दमन्द इस्लाम के प्रचारक उन्हे इस्लाम स्वीकार करने की दावत देने गए तो चूंकि उनका इस्लाम का अध्यन था और वह मुसलमानों के अन्दरूनी मस्लकी भेदभाव से वाक़िफ़ थे इसलिए उन्होंने उन लोगों से बर्जस्ता पूछा कि मुझे बताइयेकि मैं कौन सा इस्लाम कुबूल करूँ देवबन्दी, बरेलवी, शीया, सुन्नी आख़िर कौनसा इस्लाम कुबूल करूँ? बात बहुत कड़वी थी लेकिन सच थी। चुनांचि दावते इस्लाम पेश करते समय कुर्आन व सुन्नत से उसकी बुनियादी सर्वमान्य शिक्षा और उसकी अक़्ल व दिमाग़ और दिल के तारों को छेड़ने वाली उस शिक्षा को पेश करना चाहिये ताकि वह आसानी से समझ सके क्योंकि यह खुद उनकी बुनियादी ज़रूरत है ओर आख़िरत की निजात (प्रलोक में मोक्ष) का रास्ता यही है।

मस्लक (पंथ) की दावत को प्राथमिकता का दर्जा देने में इस्लाम

की दावत देने पर बड़े नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। पहले आप अक़ाएद (आस्थाओं) व कलमः व दुआ से उसे अवगत कराइये और फिर आगे मरहले में आहिस्ता आहिस्ता इस्लाम के बुनियादी सिद्धान्तों से वाकिफ़ कराइये तो इंशाअल्लाह हक़ (सत्य) के तलाश करने वाले ख़ुद सही आस्था (अक़ीदा) अपनाने वाले हो जाएंगे।

संसार के एक बड़े भाग में मुसलमान सुरक्षात्मक पोज़ीशन में ला खड़े कर दिये गये। चुनांचि उनकी शक्तियाँ सुरक्षा में खर्च होती हीं और वह अपने जीवन की रक्षा की लड़ाई लड़ते रहे। कुछ जगहों पर ऐसा भी हुआ कि सियासत और मज़हब को इतना गडमड कर दिया गया कि जो वास्तव में सियासी संघर्ष था उसे मज़हबी रंग दे दिया गया और शहादत के शौक़ के नाम पर जान निछावर करने का एक सिलसिला शुरू हो गया नतीजा में लाखों लोग इसकी नज़र हो गए। माँ की गोदें अपने लालों से खाली हो गईं और कई बहनों का सुहाग उजड़ गया। कितने खान्दानों का चिराग़ गुल हो गया। मलाल इसका है कि यह सब आन्दोलन दीन के नाम पर चलते रहे और दूसरी तरफ सूरत हाल यह हुई कि दीनी लिहाज़ से ज़मीन पैरों के तले से निकलती चली गई। गरीबी, निर्धनता, माँ बाप की यह चिन्ता कि उनके जिगर के टुकड़े इन आतंकी सेनाओं से निकल जाएं और कहीं शान्ति के ठिकाने पा जाएं। इन बातों से व्यर्थ के आन्दोलनों का मौका मिला। चुनांचि तालीम व सक़ाफ़त (शिक्षा व संस्कृति) के राह से से भी अपने मक़सद को हासिल करने में लग गए। लेखक का चन्द वर्षों पहले क़ादियान जाना हुआ था तो वहाँ मैं ने बड़ी संख्या में कशमीरी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करते हुए पया। उनके माँ बाप के सामने समस्या जान बचाने की है फिर शिकारी ऐसा जाल बिछाते होंगे कि जान की सुरक्षा ही नहीं उसमें ईमान की सलामती भी है, तालीम व तर्बियत भी है। कठिनायीं के भंवर में फंसे आम लोग उनके जाल को शान्ति की कुंज समझते हैं और अपने बच्चों की जान को सलामत देखने की आरजू में उन्हें शिकारी के हवाले कर देते हैं। दीन के नाम पर आन्दोलन चलाने वाले और अपने खून से ज़मीन को सींचने वाले इस बदतरीन सूरत हाल की तरफ ध्यान नहीं दे पाते जिस सरज़मीन पर दीन के लिए आन्दोलन चल रहा है उसी ज़मीन का नक़्शा चन्द वर्षों में दीन परिवर्तन करने की योजनाबद्ध कोशिश में बदलता जा रहा है।

यह एक अफसोस की बात है कि जिन स्थानों पर हमारी जनसंख्या अधिक है वहाँ भी हमारी तरजीहात में दावते दीन शामिल नहीं रहा। हिकमत व उपाय के बजाए जोश ओर जज़्बा हम पर ग़ालिब (प्रभावशाली) रहा। जमातो में तबलीग़ी जमात इस लिहाज से प्रमुख और प्रभावशाली है कि वह **Grassroot** का काम करती है उसने अपने लिए जो कार्यक्षेत्र चुना है वह ज़मीनी सच्चाई से जुड़ा हुआ है। जमात बुनियादी तौर से दिल में नर्मी और खुदा का डर पैदा करती है और यह वह काम है जो दावते दीन की राहों को आसान बनाती है और इसकी प्रक्रिया (तरीक़–ए–कार) की सीमाएं भी इसे उपद्रव से सुरक्षित रखे हुए हैं और एक विशेष तरीके पर ओर यक्सानियत के साथ सारे संसार में काम हो रहा है लेकिन बहरहाल यह उम्मत के सुधार का काम है और इस उम्मत को जिस काम पर नियुक्त किया गया है इस काम से उसके तक़ाज़े पूरे नहीं होते लेकिन इसकी अहमियत और फायदे से कोई इन्कार नहीं कर सकता।

रही दूसरी संस्थाएँ तो उनके पेशे नज़र दावते दीन का काम है ओर वह अपने अपने तरीक़े पर इस काम को अंजाम दे रही हैं। विभिन्न भाषाओं मुख्यकर क्षेत्री भाषाओं में कुर्आन पाक के अनुवाद और इस्लाम के परिचय सम्बन्धी लिट्रेचर का प्रकाशन, समय–समय पर अपने वतन के भाइयों के सामने इस्लाम की विशेषताओं को पेश करने के साथ–साथ इस्लाम के सन्देहों के घेरे से निकालने के लिए पुस्तकों का प्रकाशन, डाईलाग का आयोजन यह वह कोशिशें हैं जिनकी उपेक्षा करना अनुचित होगा लेकिन क्या ही अच्छा होता कि दावते दीन का काम उनकी प्राथमिकता (तर्जीह अव्वल) बन सके। अलबत्ता जो कोशिशें हो रही हैं वह सब तारीफ़ के क़ाबिल हैं।

अलबत्ता इस प्रकार के काम पढ़े लिखे और बुद्धिजीवी लोगों में किया जाना चाहिये। जिस तरह तबलीग़ी जमात उम्मत के सुधार के लिए अवामी सतह पर काम कर रही हैं उसी तरह अवामी सतह पर दीन की दावत का काम करना चाहिये। इस्लाम की तालीमात इस क़दर स्वाभाविक, सादा और आकर्षक है कि इसको समझनें के लिए किसी आइंस्टाईन के दिमाग की ज़रूरत नहीं। एक सीधा–सादा सा पैग़ाम है जो रब का अपने बन्दों के

नाम है। जिन्दगी की मलीनताओं (अलाइशों) से विवश दुनिया शान्ति चाहती है और उन्हें मन की शान्ति सही इस्लामी तालीमात में असानी से मिल सकती है। दिलों की ज़मीन का सख़्त होना, इस मार्ग में कदम कदम पर बलाओं का पाया जाना और मौका और मुश्किलें यह सोच हिम्मत पस्त करने वाली सोच है, तन आसानी की सोच है और फर्ज़ की अदाएगी से पलायन (फ़रार) की कोशिश है वरना अवामी सतह पर प्यास और तलब और सच बात को स्वीकार करने का मिज़ाज भी है।

चन्द संस्थाएँ अपने ठोस इरादों और अल्लाह की तौफ़ीक के बल बूते और उसी के सहारे पर यह काम भी कर रहे हैं। संस्थाएँ भी उन्हें कुछ सहारा और शक्ति पहुँचाती रही हैं लेकिन समस्याएँ और भी हैं और यह समस्याएँ आसानी से हल हो जाएँ अगर मुसलमान भी इस्लामी तालीमात पर अमल पैरा होकर कलमः तय्यबः की बुनयाद पर ज़ातपात, रंग व नस्ल जैसे गैर–इस्लामी रस्मों को अपने यहाँ से ख़त्म कर दें। कठिनाई यह है कि हम मुसलमानों ने पड़ोसियों को प्रभावित करने के बजाए खुद उनका असर क़बूल किया है ज़ात बिरादरी के बखेड़े इसकी एक मिसाल है।

उपरोक्त चन्द सतरें उलमाएकराम को इस मज़मून के ज़रिये दावतेफिक्र देना है। असल फैसला और

(पृष्ठ २५ का शेष)

स० यह आपके दुश्मन (शत्रु) और बाग़ी (विरोधी) की बेटी है। आपकी वह चादर जिस पर पाकीज़गी (पवित्रता) की मोहर लगी हुई है किस प्रकार उसके सिर पर रखी जा सकती है। यह सुनकर आप स० ने फरमाया बेटी हर हाल मे बेटी होती है। चाहे वह मेरी बेटी हो या दुश्मन की। जिस तरह मैं अपनी बेटी का सिर खुला नहीं देख सकता। उस के बाद आप स० की आखें अश्कबार (अश्रुपूर्ण) हो गईं। और आप स० ने फरमाया बेटी तुम हातिम ताई के जिगर (हृदय) का टुकड़ा हो। तुम्हारे वालिद (पिता) की सखावत (दानशीलता) की क़द्रा करते हुए तुम्हे आज़ाद करता हूँ और तुम्हारे साथ की सभी बन्दयों को भी आज़ाद करता हूँ। फिर आप स० ने उसको सवारी और बहुत सा सामान देकर हिफ़ाज़त के साथ विदा कर दिया।

यह है आप स० का दुश्मनों पर रहम–व–करम कि जिन लोगों ने गालियाँ दीं उनको आप स० ने दुआओं का तोहफा पेश किया। जिन्होंने पत्थर मारे उनकी हिदायत के लिए रातों को रोए। जिन्होंने आप स० की राह में कांटे बिछाए उनकी राहों में फूल बिछाया। जिन्होंने कत्ल करने का षड्यंत्र रचा उनको भी माफ कर दिया। आप स० की जिन्दगी में बहुत से अवसर आए कि आप स० हर एक से बदला ले सकते थे। खून की नदियाँ बहा सकते थे। लेकिन आप स० ने ऐसे अवसर पर भी बदला नहीं लिया और माफ कर दिया–इसलिए हमें यह कहने का हक़ है–

आए दुन्या में बहुत पाक व मुकर्रम बन कर
मगर आया न कोई रहमते आलम बन कर।

रुख़े मुस्तफ़ा है वह आईना कि अब ऐसा दूसरा आईना न किसी के हुस्ने ख़्याल में न दुकाने आईना साज में

एक पुस्तिका का परिचय

नाम पुस्तिका : मुख़्तसर सीरते हबीबे खुदा (स०)
लेखक : अल्लामा मुहम्मद बिन ताहिर पटनी (रह०)
अनुवादक : अब्दुल कादिर नदवी मजाहिरी उस्ताद दारूल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ
पृ. कवर के साथ : २०, मूल्य १० रूपया
मिलने का पता : अनुवादक से तलब करें

इस मुख्तसर सी किताब में आप को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में सारी जरूरी मअलूमात जैसे विलादत, नसब नामः, बचपन, जवानी, सफर, बिअ़सत, हिजरत, अज़वाजे मुतह्हरात, औलाद, चचा, फूफियां और वफात आसानी से मिल जाएंगी जो सीरत की किताबों के सैकड़ों सफहात पलटने पर मिल सकेंगे। इस लिहाज से यह किताब बड़ी ही मुफीद है। लेकिन अफसोस कि किताब मकसदे बिअ़सत और उसके पैग़ाम के बयान से ख़ाली है।

रही बात देवनागरी में उर्दू अल्फाज के तलफ़्फ़ुज की तो जब तक उर्दू अलफाज हिन्दी में लिखने वाले मिल कर कोई फैसला न करेंगे यक्सानियत न आयेगी। यह किताब उर्दू में भी आ गई है उसमें लेखक की जीवनी भी शामिल है और उसका मूल्य २० रूपये है।

तबसिरे के लिए किताब के दो नुस्खे भेजना जरूरी हैं।

आपके प्रश्नों के उत्तर

मुफ्ती मुहम्मद तारिक नदवी

प्रश्न : एक मस्जिद के इमाम साहिब पेन्ट (रंगाई) कर रहे थे कि अज़ान हो गई, उन्होंने हाथों से रंग साफ़ करके वुज़ू किया और इमामत की, नमाज़ के ख़त्म पर उनकी निगाह अपने हाथों पर पड़ी तो कुछ रंग की छींटें नज़र आईं, तो उन्होंने अपने मुक्तदियों में एलान किया कि मेरे हाथ पर रंग के छींटे बाक़ी रह गये हैं इसलिये मेरा वुज़ू नहीं हुआ लिहाज़ा नमाज़ नहीं हुई। आप हज़रात किसी और को इमाम बनाकर जमाअ़त से नमाज़ दुहरा लें। सुवाल यह है कि क्या हक़ीक़तन (वास्तव) में नमाज़ नहीं हुई? या नमाज़ हो गई?

उत्तर : पूछी गई सूरत में इमाम साहिब की बात सहीह है। रंगाई वाले आइली रंग के नीचे पानी नहीं पहुंचता इस लिये वुज़ू नहीं हुआ और वुज़ू नहीं हुआ तो नमाज़ नहीं हुई, अतः नमाज़ दुहराना ज़रूरी था।

प्रश्न : शादी या किसी और तक़रीब (समारोह) में वीडियो फिल्म बनती है क्या यह दुरुस्त है?

उत्तर : वीडियो फिल्म बिना किसी शरअ़ी ज़रूरत के तफ़रीहन बनाना दुरुस्त नहीं जिसके बहुत से अस्बाब हैं जैसे जानदार की तस्वीर बे ज़रूरत बनाना, बे पर्दगी वगैरह होना।

प्रश्न : दाढ़ी कतरवाने वाले इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है?

उत्तर : जो शख़्स दाढ़ी मुंडाता है या कतरवा कर एक मुट्ठी से कम कर देता है उसके पीछे नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तहरीमा है।

प्रश्न : क़ब्रिस्तान में झोंपड़े बनाना कैसा है?

उत्तर : जो ज़मीन क़ब्रिस्तान के लिये वक़्फ़ हो उस में रिहाइशी झोंपड़े बनाना दुरुस्त नहीं।

प्रश्न : अज़ान के वक़्त वुज़ू करना कैसा है।

उत्तर : अगर वक़्त में गुंजाइश हो और जमाअ़त छूटने का अन्देशा न हो तो अज़ान का जवाब देकर वुज़ू करें लेकिन जमाअ़त छूटने का ख़तरा हो तो अज़ान होते में वुज़ू कर सकते हैं।

प्रश्न : मस्जिद की एक बड़ी रक़म बैंक में जमा है जिस पर सूद मिला है, क्या मस्जिद के किसी काम में यह सूद की रक़म लगा सकते हैं? क्या इस रक़म से मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ पाख़ाना पेशाब की जगहें बना सकते हैं? या फिर इसका खर्च कहाँ हो?

उत्तर : मस्जिद की रक़म पर बैंक से जो सूद की रक़म मिलती है, मस्जिद के किसी भी काम में ख़र्च नहीं कीं जा सकती, इस रक़म से मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ लैट्रीन भी बनाना ठीक नहीं कि उससे अमीर ग़रीब दोनों फ़ाइदा उठाते हैं। सूद की इस रक़म को बिला नीयत सवाब ग़रीबों को दे सकते हैं।

प्रश्न : गवर्नमेन्ट की ज़ानिब से दीहातों में हैन्डपाइप लगाये जाते हैं। अगर ग़ैर–मुस्लिम या हुकूमत किसी मस्जिद में ख़ुद से हैन्ड पाइप लगाने को कहे या कोई माली इम्दाद मस्जिद को दे तो क्या हैन्ड पाइप लगाने और माली इम्दाद को मस्जिद के लिये क़बूल किया जा सकता है?

उत्तर :अगर कोई ग़ैर–मुस्लिम मस्जिद में हैन्ड पाइप लगाने का इन्तिज़ाम करे या माली इम्दाद दे मगर कोई शर्त न लगाए तो मस्जिद के लिये क़बूल किया जा सकता है।

प्रश्न : एक ग़ैर–मुस्लिम ने सुवाल किया कि क़ुर्आने मजीद में जगह–जगह ख़ुदाए तआला को रहमान और रहीम बताया गया है तो फिर आख़िर क्यों ख़ुदा ने जानवरों को ज़बह करने और खाने का हुक्म दिया क्या यह बेरहमी नहीं है?

उत्तर : सारी सृष्टि अल्लाह की है वही उसका वास्तविक हाकिम है, तमाम इन्सानों को उसी का दास (ग़ुलाम) होकर ज़िन्दगी बिताना चाहिये उसने तो हम पर अपने पुरस्कारों की वर्षा कर दी है। उन पुरस्कारों में ग़ल्ला, सब्ज़ी आदि के साथ हलाल जानवरों का गोश्त भी है जो इन्सानी ग़िजा (आहार) है। हलाल जानवरों के ज़बह और क़ुर्बानी करने और उनके गोश्त खाने की इजाज़त वास्तव में उसका हम पर बड़ा इनआ़म है अगर वह इसकी इजाज़त न देता तो हम बड़ी अहम तरीन (महत्वपूर्ण) ग़िज़ा से महरूम (वंचित) रह जाते। उसका यह हुक्म और यह इजाज़त उसके रहीम व करीम होने के ख़िलाफ़ हरगिज़ नहीं है इसलिये कि उसने हर जानवर को एक ख़ास मुद्दत (समय) के लिये पैदा किया है जब वह मुद्दत पूरी हो जाती है तो उस

पर मौत आती है। इस मौत के मुख्तलिफ़ (विभिन्न) तरीक़े होते हैं, फित्री मौत, बीमारी से मौत, हादिसे से मौत जैसे अक्सीडेन्ट से, आग में जलकर, पानी में डूबकर, पेड़ से गिरकर, सांप के कांटने पर, किसी दरिन्दे (हिन्सक पशु) के खा जाने आदि से मौत आती है तो किसी तरीके में भी नहीं कहा जा सकता कि वह ख़ुदा रहीम व करीम नहीं है पर अगर वह किसी जानवर को ज़बह करने, कुर्बान करने और उसका गोश्त खाने का हुक्म देता है तो यह हुक्म उसके रहीम व करीम होने के ख़िलाफ़ कैसे हो सकता है? बस पता यह लगाना चाहिये कि किसी ईमान वाले को किसी जानवर को ज़बह करने और खाने का हुक्म दिया है या नहीं? यहाँ यह सुवाल उठता है कि क्या जानवर इन्सान जैसा जानदार नहीं है अगर है तो किसी इन्सान को ··· ज़बह करके खाने का हुक्म तो नहीं दिया सिर्फ बअ़ज़ जानवरों ही को ज़बह करने की आज्ञा क्यों दी? तो मअ़लूम होना चाहिये कि जान पशु (जानवर) में भी है और इन्सान मे भी और पेड़ पौदों और सबज़ियों में भी, जानवरों की जान पेड़ पौदों जैसी है। इन्सानों जैसी हरगिज़ नहीं है पस उस रहीम व करीम ख़ुदा ने जिस तरह पेड़ पौदों को इन्सानों के लिये पैदा किया उसी तरह जानवरों को भी इन्सानों के लिये पैदा किया कि उनके दूध से फ़ाइदा लें, उन पर सवारी करें, उन का गोश्त खाएं, उन की हड्डी और खाल काम में लाएं। स्पष्ट रहे यह उसकी क़ुदरत ही है कि बकरी और उस जैसे पशुओ को सिर्फ़ घास खाने वाला बनाया, और शेर और उस जैसे पशुओं को सिर्फ़ गोश्त खाने वाला बनाया तो इन्सान को गल्ला सब्जी खाने वाला भी बनाया और गोश्तखोर भी बनाया यह शाकाहारी भी है और मांसाहारी भी।

प्र२ल : एक शख़्स का पेशाब बन्द हो गया उसके इलाज में डाक्टर ने नाफ़ के पास आप्रेशन करके रबर की नल्की लगा दी, मुकम्मल इलाज होने से पहले अब पेशाब उसी नल्की से करता है उस नल्की में पेशाब भरा रहता है और उसका सिरा धागे से बन्धा रहता है जब पेशाब करना हुआ धागा खोलकर पेशाब करा दिया फिर नल्की का मुंह बन्द कर दिया यह पेशाब भरी नल्की हर वक्त पेट पर रहती है ऐसी सूरत में ऐसे मरीज़ की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तर:ऐसी सूरत में उस नल्की को जिस्म का एक जुज़्व समझते हुए वुज़ू करके नमाज़ पढ़ेंगे नमाज़ मुआफ़ न होगी, खड़े नहीं हो सकते तो बैठे–बैठे पढ़ें, बैठकर भी नहीं पढ़ सकते तो लेटे लेटे नमाज़ अदा करें मगर होश हवास रहते हुए नमाज़ हरगिज़ न छोड़ें।

प्र२ल : क्या ज़कात फ़र्ज़ हो जाने पर उसकी अदाएगी में जल्दी करना चाहिये?

उत्तर : हाँ साहिबे निसाब यअ़नी साढ़े बावन तोला (६१२ग्राम) चान्दी या उसकी क़ीमत पर साल गुज़र जाए तो उसकी ज़कात यअ़नी उस का चालीस्वां हिस्सा ज़कात के हक़दारों को पहुंचाने में देर न करना चाहिये। मालदार को ज़कात निकालने का कोई महीना मुकर्रर कर लेना चाहिये और इसके लिये रमज़ान का महीना सबसे अच्छा महीना है पर रमज़ान में जो माल उसके पास हो उसकी ज़कात अदा करे चाहे शव्वाल में उतना माल न रहा हो और चाहे शुरूअ़ साल के कई महीनों तक बहुत माल रहा हो मगर शअ़बान में घट गया हो गरज़ कि रमज़ान में जो माल हो उसकी ज़कात अदा कर दें।

अगर किसी के पास चान्दी बिल्कुल न हो सिर्फ सोना हो तो जब तक साढ़े सात तोला (८७ ग्राम) सोना न हो उस पर ज़कात फ़र्ज नहीं। अगर उसके पास सोना और चान्दी दोनों हो तो अगर उन दोनों की क़ीमत साढ़े बावन तोला (६१२ग्राम) चान्दी की कीमत के बराबर है तो वह साहिबे निसाब है उसके माल पर साल गुज़र जाने पर ज़कात फर्ज़ हो जाएगी।

प्र२ल : लड़कियों को मीरास (मरने वाले की छोड़ी हुई सम्पत्ति) में हिस्सा यह कहकर देना कि तुम अपना हिस्सा अपने भाइयों को दे दो कैसा है?

उत्तर : बिल्कुल नाजाइज़ है। मीरास में लड़कियों का जितना हिस्सा है वह उनका हक़ है उन पर किसी क़िस्म का दबाव डालना कि वह अपना हिस्सा लेकर भाइयों को दे दे हरगिज़ जाइज़ न होगा अलबत्ता वह अपने हिस्से की मालिक हैं जिसे चाहें अपनी ख़ुशी से दे सकती हैं। वह अपने भाइयों को भी अपना हिस्सा चाहें तो दे सकती हैं।

प्र२ल : वुज़ू करने के बअ़द अगर दांत से खून निकले तो वुज़ू रहेगा या टूट जाएगा?

उत्तर : अगर थूक का रंग खून की तरह लाल हो जाए तो वुज़ू टूट जाएगा, हल्का–हल्का खून का रंग थूक में होगा तो वुज़ू न टूटेगा।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

साक्षात करूणा

मौ० असअदुल्लाह नदवी

यदि मुझसे पूछा जाए कि इतिहास का सबसेदयालु व्यक्ति कौन है? तो मैं जवाब (उत्तर) दूंगा कि मुहम्मद स० की ज़ात है। परन्तु मुझसे यह भी पूछा जाए कि इतिहास में सबसे अधिक कष्ट और संताप का पीड़ित कौन है? तो मैं कहूँगा कि आप स० की ज़ात है। इसलिए कि इतिहास में इसके शवाहीद मौजूद हैं।

मक्का की विजय गाथा से कौन वाक़िफ़ (परिचित) नहीं है। उस दिन जानी दुश्मनों के साथ आप स० का हुसने सुलूक और एहसान (सद्व्यवहार) इतिहास का एक रौशन बाब है। लगातार बीस वर्ष के जुल्म (अन्याय) और ज्यादती (अत्याचार) सहन करने के बाद जब आठ हिजरी में मक्का पर मुसल्मानों को फतह (विजय) हुई तो काबा के सेहन में कुरैश के मुजरिम बैठे हुए थे उनमें वह लोग भी थे जिन्होंने आप स० के सहाबा को अनेक प्रकार से सताया था। पांव में रस्सी बांधकर मक्का की गलीयों में घसीटा था। दोपहर की तेज धूप में रेत पर लेटा कर सीने पर भारी पत्थर रख दिया था ताकि तकलीफ़ से बेचैन होकर करवट न बदल सकें। उनमें वह लोग भी थे जिन्होंने आप स० के सहाबा और सम्बन्धियों का नाहक (अनायास) रक्त बहाया था। उनकी छाती फाड़ कर उनके हृदय और कलेजे को चबाया था। उनके नाक कान काटकर गले का हार बनाया था। वहां वह लोग भी मौजूद थे जिन्होंने आप स० को गालियां दी थी। आप स० के मुबारक जिस्म (पवित्र शरीर) पर गंदगी डाली थी। आप स० पर पत्थर बरसाए थे। आप स० के रास्ते (मार्ग) में कांटे बिछाए थे। सजदे की हालत में आप स० की पीठ पर ऊँट की ओझ डाली थी। आज प्रत्येक को अपने माजी (भूतकाल) के मज़ालिम (अन्याय) अच्छी तरह (पूर्णरूप) से याद आ रहे थे। इधर जब उन्होंने देखा कि आप स० के पीछे दस हज़ार बहादुर (वीर) हर तरह के हथियार (शस्त्र) से सजे धजे (सुसज्जित) आप स० की इजाज़त के इन्तेजार में हैं। तो मारे डरके थर थर कांपने लगे। और निगाहें झुकाकर मौत के फैसले का इन्तेज़ार करने लगे। लेकिन कुर्बान जाईए आप स० के अख़लाक (आचार) पर कि जब आप स० की ज़बाने-मुबारक खुली तो पूछा! कुरैश के लोगो! बताओ आज मैं तुम्हारे साथ क्या सुलूक (व्यवहार) करूंगा?

धीमी आवाज़ में जवाब मिला "ऐ मुहम्मद तू हमारा शरीफ भतीजा है।" यह सुनते ही आप स० ने फरमाया जाओ आज मैं भी तुम से वही कहता हूँ जो यूसुंफ अ० ने अपने भाईयों से कहा था।

जाओ आज तुम सब आजाद हो। मक्का के समस्त वासियों को सूचित कर दो कि आमिना का राज दुलारा हत्या की भट्ठी में झोंकने के लिए नहीं आया है। मक्का की माताओं से कह दो! आज तुम्हारी ममता नहीं झूटी जाएगी। नन्हे मुन्ने बच्चों से कह दो! तुम्हें अनाथ नहीं किया जाएगा। बहनों से कह दो! तुम्हारी ओढ़नी नहीं छीनी जाएगी! जो काबा के हरम मे दाखिल हो गया वह आज़ाद! जो अबू सुफयान के घर में दाख़िल हो गया वह आजाद! जो घर का दरवाजा बंद कर ले वह भी आजाद। क्योकि मैं यतीमों का वाली और गुलामों का मौला बनाकर भेजा गया हूँ।

कुर्आन कहता है–

"ऐ नबी हमने आप को सारे जहान (समस्त जगत) के लिए रहमत (दया सागर) बनाकर भेजा है।

आप स० ने बहुत से ऐसे नमूने छोड़े हैं जिनका उदाहरण सारे इतिहास में मिलना मुश्किल है। ६ हिजरी के एक युद्ध का वाक़िया भी ऐसा ही है। हुआ यह कि जब हातिम ताई (जिसकी सखावत मशहूर है) की बेटी अपने कबीले की औरतों के साथ आप स० के पास लाई गई तो उसके सिर से ओढ़नी सरक गई थी और सिर खुला हुआ था। यह देखकर आप स० ने अपने एक सहाबी र० को अपनी चादर देते हुए फरमाया– बालिका का सिर ढांक दो। यह सुनकर वह हैरान (चकित) रह गए। कहा–ऐ अल्लाह के रसूल

(शेष पृष्ठ २२ पर)

मसाज करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है

ज़रीना शुजाअ़त

स्वस्थ रहने में मालिश का कोई जवाब नहीं। मालिश से जहाँ आप चुस्त–दुरुस्त रहते हैं वहीं आप मालिश द्वारा कई बीमारियों को दूर भगा सकते हैं क्योंकि जब भी आपको कोई चोट लगती है तब तुरंत आपका हाथ उसी दुखती हुई जगह को सहलाने लगता है। विभिन्न शोधों से मालूम हुआ है कि मालिश के द्वारा आसानी से ज़हनी उलझन को दूर किया जा सकता है। आज हर आदमी ज़हनी उलझन में है। यह उलझन और तनाव जिस्मानी और ज़ेहनी दोनों तरह का हो सकता है। यही कारण है कि इन दिनों लोग हाई ब्लडप्रेशर, दिल की बीमारियों, डिप्रेशन और दूसरी बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। जिस्मानी और ज़हनी तनाव को दूर करने के बहुत से तरीक़े हैं जिन में मालिश एक बहुत कारगर तरीका है।

ऐसा माना जाता है कि आज से पांच हज़ार साल पहले चीनी डाक्टर मालिश के द्वारा न केवल लोगों को स्वस्थ रखते थे बल्कि कई बीमारियों का इलाज भी करते थे। हमारे देश में मालिश का काम बच्चे की पैदाइश के समय से ही शुरू हो जाता है। बच्चे की पैदाइश के बाद माँए अपने बच्चे की तेल से मालिश करती हैं ताकि वह तन्दुरुस्त रहे। इतना ही नहीं पुराने जमाने में बच्चे की पैदाइश के बाद माँ की भी मालिश की जाती थी। आप ने यह बात अक्सर महसूस की होगी कि सिर में दर्द होने पर सिर की मालिश करने से काफी आराम मिलता है। मालिश द्वारा निम्नलिखित समस्याओं से बचा जा सकता है। मालिश से खून का दौरान (रक्त संचार) ठीक तरीके से हो जाता है। इस वजह से आप तरो–ताज़ा महसूस करते हैं। पट्ठों का तनाव मालिश से ठीक हो जाता है। अगर पट्ठों में ऐठन है तो यह शिकायत भी दूर हो जाती है।

तनाव और कड़ी मेहनत की वजस से होने वाले दर्द (सिर, गर्दन, पीठ) को मालिश से आराम मिलता है। मालिश के ज़रिए हाज़मा ठीक रहता है और कब्ज़ आदि की शिकायतें दूर हो जाती हैं। शरीर में एक नई चुस्ती फुर्ती का एहसास हो जाता है परिणाम स्वरूप नकारात्मक विचार (मनफी ख़्यालात) नहीं आते और शरीर की नसों का तनाव भी दूर हो जाता है। मालिश से जिल्द को ताक़त मिलती है और उसकी चमकदमक बरकरार रहती है।

निम्नलिखित परिस्तिथियों में मालिश न करें–

१. जोड़ों में सूजन या गठिया में मालिश न करना चाहिये। कुछ बीमारियों में मालिश करने से लाभ कम हानि अधिक होती है। अगर आप इन बीमारियों के शिकार हैं तो मालिश हर्गिज़ न करें।

२. बुखार की हालत में जिस्म की मालिश हरगिज़ न करें।

३. फ्रेक्चर हो जाने की दशा में मालिश न करें।

४. जिल्द में किसी प्रकार के फोड़े फंसी की शिकायत होने पर भी मालिश न करवाएं।

५. हाई ब्लड प्रेशर (उच्च रक्तचाप) और दिल की बीमारियों में मालिश नहीं करानी चाहिये इससे हानि होती है।

याद रखें शरीर के किसी खास भाग पर सख़्त हाथों से बहुत अधिक दबाव डालना हानिकारक है।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू के सौजन्य से)

लेखकों से अनुरोध है
पन्ने के एक ओर लिखें।
सुन्दर न लिखें तो स्पष्ट
अवश्य लिखें।
किताब व सुन्नत की बात
लाएं तो संदर्भ
अवश्य लिखें।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

डेनमार्की कार्टूनिस्ट की अशिष्टता

निःसन्देह डेनमार्की कारटूनिस्ट ने बड़ा ही घिनावना काम किया है जिससे समस्त संसार के मुसलमानों और सभी न्याय प्रेमियों को बड़ा दुख पहुंचा है। जिस व्यक्ति का नाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहे बिना कोई मुसलमान नहीं लेता, उस की निन्दा कोई कैसे सहन कर सकता है, अतः पूरे विश्व के मुसलमानों ने दुखी होकर डिनमार्की समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी लोगों के विरुद्ध अपने क्रोध तथा रोष का प्रकटीकरण समारोहों तथा जनयात्राओं द्वारा किया, साथ ही डेनमार्क की निर्मित वस्तुओं का त्याग भी किया। जिस से डेनमार्क को भारी हानि का सामना करना पड़ रहा है।

निःसन्देह इन विरोधी प्रदर्शनों में हमारे बहुत से भाई मारे भी गये उनको तो शहीद का पद प्राप्त होगा, परन्तु हमको सावधान रहना चाहिये और ऐसा कोई कार्य न करना चाहिये जिससे उलटा अपने ही को हानि पहुंचे, हाँ यदि इस विषय पर डेनमार्क से भिड़ाव हो जाए और इस्लामी सत्ता की ओर से जिहाद की घोषणा हो जाए तो फिर जान की कोई परवाह नहीं, गाज़ी होंगे या शहीद परन्तु प्रदर्शन में दूसरों द्वारा हम मारे जाएं या अपने राष्ट्र की सम्पत्ति नष्ट हो ऐसा न होना चाहिये और इसमें सावधानी चाहिये।

बिअरे मऊन पर बनू सुलैम ने धोखा देकर ७० सहाबा को घेरकर मारा था उनमें से केवल एक व्यक्ति बचा था जिसके द्वारा घटना की सूचना मिली थी। इस हिंसात्मक अत्याचार की सूचना से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अत्यधिक दुख पहुंचा था और आप ने एक मास तक फ़ज्र की नमाज़ में उन अत्याचारियों के विरुद्ध बद्दुआ की थी हम को भी चाहिये कि ऐसे दुख तथा क्रोध की दशा में प्रदर्शनों के साथ–साथ नमाज़ों के पीछे विशेषकर फ़ज्र की नमाज़ में उन डेनमार्कियों के विरुद्ध दुआ करें। यह बात तो हर दशा में स्पष्ट है कि इस संसार में भी वह अशिष्ट तथा उसके सहयोगी इलाही अज़ाब (ईशप्रकोप) से नहीं बच सकते आखिरत में तो उनको अज़ाब भुगतना ही है।

हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बहुत से बादशाहों को खुतूत (पत्र) लिखे, ईरान के बादशाह किस्रा ने आप का खत फाड़ कर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तौहीन का इरादा किया, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया : अल्लाह ने उस की हुकूमत के टुकड़े कर दिये उस वक्त मुसलमान इस पोजीशन में न थे कि किस्रा पर हम्ला कर देते, अल्लाह ने खुदा बदला ले लिया और किस्रा के बेटे ने खुद अपने बाप को कत्ल कर दिया आज भी अगर मुस्लमान इस पोजीशन में नहीं हैं कि डिन्मार्की को सजा दे सकें लेकिन मुख्लिस हैं तो अल्लाह डिन्मार्की से खुद बदला ले लेगा।

नअ़त

ख़ुसरवी अच्छी लगी न सरवरी अच्छी लगी
हम फ़क़ीरों को मदीने की गली अच्छी लगी
दूर थे तो ज़िन्दगी बेरंग थी बेकैफ़ थी
उनके कूचे में गए तो ज़िन्दगी अच्छी लगी
मैं न जाऊँगा कहीं भी दर नबी का छोड़कर
मुझको कूए मुसतफ़ा की चाकरी अच्छी लगी
नाज़ कर तू ऐ हलीमा सरवरे कौनैन पर
गर लगी अच्छी तो तेरी झोपड़ी अच्छी लगी
रख दिया सरकार के क़दमों पे सुलतानों ने सर
सरवरे कौनों मकां की सादगी अच्छी लगी
मेहरो मह की रोशनी माना कि अच्छी है मगर
सब्ज़ गुम्बद की मुझे तो रोशनी अच्छी लगी

ज़िन्दगी की अस्ल पूँजी

ख़ुदा और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की महब्बत है

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी

महब्बत दिल की पूँजी है :—

अल्लाह तआला ने हर इन्सान के अन्दर महब्बत का माददः रखा है और महब्बत कहते हैं दिल का किसी चीज़ की तरफ़ झुक जाने और उससे तअल्लुक़ हो जाने को, उससे पसन्दीदगी का रिश्ता क़ाइम हो जाने को, वैसे अस्लन इसके मअना हैं दिल का झुकाव होना। यह एक ऐसी सिफ़त है बल्कि यह ऐसी पूँजी है कि अगर यह इन्सानों में न हो तो दुन्या का निज़ाम (व्यवस्था) बिगड़ जाए और ज़िन्दगी की सारी बहारें ख़त्म हो जाएं, ज़िन्दगी की चहल–पहल, दुन्या की बहार, इन्सान का आनन्द और आलम (संसार) की सरगर्मियाँ (चेष्टाएं) इसी से क़ाइम और इसी एक मरकज़ (केन्द्र) के गिर्द घूमती हैं लेकिन इसके दो रुख़ हैं एक हक़ीक़ी (वास्तविक) दूसरा मजाज़ी (कल्पित) हक़ीक़ी महब्बत हक़ीक़त तक पहुंचाती है। ज़िन्दगी को हमेशगी देती है, जीने का मज़ा सिखाती है, अम्न व सलामती और कामयाबी की ज़मानत लेती है, रक़ाबत की तंगियों से, बेरुख़ी की उलझनों से, नाकामी के ख़ौफ़ से दूर और उससे बुलनद व पाक करती है। इसके ख़िलाफ़ मजाज़ी महब्बत, महब्बत नहीं महब्बत का छिल्का है, महब्बत का जाम नहीं बल्कि महब्बत का लेबिल है जिसका कुछ मुशाहदा आज कल हो रहा है क्योंकि आज कल महब्बत का नाम तो लिया जा रहा है लेकिन हक़ीक़तन (वास्तव) में महब्बत है नहीं इसलिये कि उसकों महब्बत कहते ही नहीं कि कुछ दिन तअल्लुक़ रहे और फिर तअल्लुक़ ख़त्म हो जाए। आप कुछ दिन के लिये उसको अच्छा समझें और फिर बुरा समझने लगें। महब्बत जब किसी से होती है, किसी चीज़ से होती है तो वह बाक़ी रहती है, आज कल जो कुछ है वह महब्बत नहीं बल्कि मतलब परस्ती है, जैसे किसी ने कहा कि आज इश्क़ का लफ़्ज़ (शब्द) बहुत इस्तिअमाल होता है लेकिन यह इश्क़ नहीं फ़िस्क़ है, इसलिये कि इसमें भी कारोबार है, आदमी अपना मतलब निकालना चाहता है, जब मतलब उसका निकल जाता है तो उसका तअल्लुक़ ख़त्म हो जाता है, महब्बत तो ऐसी चीज़ है कि जब वह तअल्लुक़ किसी से क़ाइम करती है तो फिर ख़त्म नहीं करती इसीलिये जो लोग बुरी आदतों में मुबतला हैं, या उनके जो बुरे ख़यालात व जज़बात हैं उसी बुन्याद पर वह तअल्लुक़ क़ाइम करते हैं या महब्बत का इज़हार करते हैं उनका भी हाल यह है कि जिस ग़रज़ व बुन्याद पर तअल्लुक़ क़ाइम किया गया जब वह ग़रज़ मुकम्मल हो जाती है तो वह तअल्लुक़ कमज़ोर हो जाता है बल्कि महब्बत ही ख़त्म हो जाती है वजह यह है कि सहीह महब्बत हुई ही नहीं, मतलब के लिये दिल माइल हुआ और जब मतलब के लिये दिल माइल हुआ, ग़रज़ के लिये दिल माइल हुआ तो वह क़ाइम नहीं रहता इसीलिये अस्ल महब्बत उसको कहते हैं जो बेग़रज़ हो और जब किसी से बेग़रज़ की महब्बत होती है तो वह ख़त्म नहीं होती, वह हमेशा क़ाइम रहती है।

महब्बत से काम आसान हो जाता है

इसीलिये अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत करने का हुक्म दिया गया कि अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत करो और जब अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत होगी तो अल्लाह और उसके रसूल की बात मानना, उनके हुक्मों पर चलना आसान हो जाएगा इसलिये कि महब्बत इताअ़त (पैरवी) को आसान बना देती है, बल्कि हर मुश्किल को आसान बना देती है, मसाइल (समस्याओं) को हल कर देती है, मसाइल को हल्का कर देती है, परेशानियाँ दूर कर देती है महब्बत अज़ीब है अगर महब्बत हो जाए तो महब्बत कड़वी चीज़ को मीठा बना देती है, पत्थर को मोम कर देती है, आग को ठन्डक बख़्शती है इसीलिये हुक्म है कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) से महब्बत करो और इसमें एक बचकाना इश्काल (समस्या) कभी–कभी सामने आ जाता है कि महब्बत की नहीं जाती महब्बत हो जाती है, दिल पर किसी को इख़्तियार तो नहीं। जिधर माइल हो जाए, जिससे

तअ़ल्लुक काइम हो जाए जिससे महब्बत हो जाए, यह तो कोई ऐसी चीज़ नहीं जो जबरदस्ती किसी चीज़ की तरफ़ माइल करे तो फिर यह मुतालबा कैसा यह तो ग़ैर इख़्तियारी चीज़ का मुतालबा हुआ और ग़ैर इख़्तियारी चीज़ का मुतालबा क़ुर्आन व ह़दीस में नहीं।

मुताल्बा इख़्तियारी चीज़ का किया जाता है

पूरा क़ुर्आन उठाकर देख लीजिए, तमाम अहादीस उठाकर देख लीजिये जिस चीज़ के करने का हुक्म दिया गया या जिस चीज़ से रोका गया वह इख़्तियारी ही होगी। यअ़नी जो आदमी कर सकता है, हाँ कभी ज़िहन में यह आता है कि यह काम हम नहीं कर सकते लेकिन वह नफ़्स का बहकावा होता है और नफ़्स का एक किस्म का धोखा होता है जब अल्लाह ने फ़रमाया करो। रसूल ने फ़रमाया करो। तो ज़ाहिर है कि ऐसा ही काम होगा जिसे आदमी कर सकता है वरना हुक्म ही न दिया जाता इससे ख़ुद यह बात साफ़ हो गई कि जब अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म है कि अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत करो तो मअ़लूम हुआ कि अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत इख़्तियारी है, ग़ैर इख़्तियारी नहीं है और जो ग़ैर इख़्तियारी का एक धोखा है वह भी इस लिये कि हम उसको जज़बाती निगाह से देखते है, इसलिये समझते हैं कि ग़ैर इख़्तियारी है। क्यों इख़्तियारी है? यह भी ग़ौर करने की बात है इख़्तियारी कैसे है? हम लोग तो इसे ग़ैरइख़्तियारी समझते हैं।

महब्बत के अस्बाब

अगर आप ग़ौर करें तो मअ़लूम यह होगा कि पहले महब्बत की बुन्याद और उसके अस्बाब और इल्लत पर ग़ौर किया जाए। चन्द चीज़ें हैं जिनकी बुन्याद पर महब्बत होती है एक तो ख़ूबसूरती है जैसे मंज़र (दृश्य) अच्छा है ख़ूबसूरत है। दरया का, पहाड़ियों का, बाग़ात का, नहरों का मंजर बड़ा अच्छा मअ़लूम होता है, जी चाहता है कि वहीं रह पड़ें तो भाई उससे महब्बत हो जाती है। आदमी छोड़कर चला जाता है लेकिन बराबर उसकी याद आती है। अच्छा दरख़्त है, अच्छा घर है, अच्छी मस्जिद है मअ़लूम हुआ कि हुस्न की वजह से महब्बत होती है। कोई हुस्न व जमाल वाला है उसकी तरफ़ दिल झुकता है। उसके बअ़द दूसरा सबब जिसकी वजह से महब्बत हो जाती है वह कमाल है, किसी के अन्दर कमाल पाया जाता है या कोई बहुत कामिल चीज़ है अगर घर बना है मगर अधूरा है, दरवाज़ा टूटा हुआ है तो वह अच्छा नहीं लगेगा। एक घर नया मुकम्मल और जामिअ़ है, हर चीज़ सजी सजाई और अपनी जगह पर सलीक़े से रखी हुई है, सो ख़ुद बख़ुद उसकी तरफ़ मन का खिंचाव होगा। ऐसे ही कोई कमाल वाला है तक़रीर अच्छी करता है, पढ़ाता अच्छा है रहनुमाई अच्छी करता है, इलाज अच्छा करता है, किसी चीज़ में भी कमाल हासिल है यहां तक कि आज आप देख लीजिये कि खेलने वाले अपने खेलने में कमाल पैदा कर लेते हैं तो हमारे नवजवानों का उनसे कितना तअ़ल्लुक़ हो जाता है। किसी के अन्दर कोई कमाल है तो उससे तअ़ल्लुक़ पैदा हो जाता है। तीसरी चीज़ है एहसान, एहसान की वजह से भी आदमी को महब्बत हो जाती है। किसी ने किसी पर एहसान किया तो उसको आदमी नहीं भूलेगा, जितना बड़ा एहसान होगा उतनी ही ज़ियादा उससे महब्बत हो जाएगी। यह गोया तीन चीज़ें तो महब्बत के अस्बाब (कारणों) में फ़ित्री (प्राकृतिक) हैं, जिनको हर शख़्स जानता और समझता है। अब अगर आप उसमें इल्लत (कारण) तलाश करें, जैसे इल्लत यह है कि जमाल (सुन्दरता) कमाल (कौशलता) एहसान (उपकार) इन तीन की बुन्याद (आधार) पर महब्बत होती है। जहाँ तक जमाल का तअ़ल्लुक है, अगर आप इसमें ग़ौर करें तो इसमें भी इख़्तियार का दख़्ल है, जैसे बहुत अच्छा मंज़र (दृश्य) है, अगर आप उसे न देखें तो क्या बिन देखे महब्बत हो जाएगी? नहीं होगी। कोई बहुत ख़ूबसूरत है उसे आप न देखिये तो क्या बिना देखे महब्बत हो जाएगी? नहीं होगी। इसीलिये क़ुर्आने मजीद में फ़रमाया गया कि ईमान वालों से कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखें। तो मअ़लूम हुआ कि महब्बत देखने से होती है और देखना आपके इख़्तियार में है आप न देखिये देखने से आपको रोक दिया गया। यही मुआमला कमाल का भी है, अगर कमाल की जानकारी आपको न हो, कमाल को आप न जानें तो नहीं होगी महब्बत। एक शख़्स आपके पास बैठा है बड़े कमाल वाला है मगर आपको उसका कमाल मअ़लूम नहीं है, नहीं होगी महब्बत। यही हाल इहसान का भी है। अगर इहसान करने वाला इहसान न करे या आप इहसान को न मानें तो महब्बत न होगी, मअ़लूम हुआ इहसान वाली महब्बत भी इख़्तियारी है तो जब मुआमला हर सूरत में इख़्तियार का है तो अल्लाह और उसके रसूल

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से महब्बत होना चाहिये क्योंकि इन तीनों चीज़ों की अस्ल बुन्याद यही दो हस्तियाँ हैं, एक अल्लाह की ज़ात दूसरे दुन्या में रसूले पाक अलैहिस्सलात वस्सलाम की ज़ात, जहाँ कहीं भी कोई हुस्न व जमाल नज़र आता है वह सब अल्लाह का दिया हुआ है। अगर आदमी यह सोचे तो महब्बत का रुख़ बदल सकता है। यह हसीन मंज़र बनाया किसने? इस हसीन को पैदा करने वाला कौन है? इसको ऐसा ख़ूबसूरत किसने बनाया? बस एकदम नज़र यहाँ उधर चली जाएगी, इधर जो महब्बत होने वाली थी उधर हो जाएगी। कितना बुलन्द व बाला है वह जिसने इन्सान को इतना ख़ूबसूरत बनाया, अच्छे से अच्छा उसका जिस्म तैयार किया बस उससे तअल्लुक़ पैदा हो जाएगा और कमाल जो कुछ दुन्या में नज़र आये ख़ुदा की तरफ़ से आया है और फिर उसके बाद रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उस का ज़रीअः हैं। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी सबसे बड़े साहिबे कमाल हैं, सारे कमालात आप पर ख़त्म हैं, और हुस्न व जमाल में भी जनाब रसूले पाक अलैहिस्सलाम के बराबर कोई नहीं। इसलिए कि शिमाइल में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का जो नक़्शा खींचा गया है उससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। तस्वीर कशी से आजिज़ मअलूम होते हैं बल्कि तस्वीर कशी करने वाले मजबूर होकर यह कहने लगते हैं कि इससे ज़ियादह आगे नहीं बढ़ सकते तो, रसूले पाक अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जो हुस्न दिया था सहाब–ए–किराम भी सरापा बयान करते–करते यह कह उठते थे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जैसा न पहले देखा न बअद में, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का यह एहसाने अज़ीम है कि उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सरापा हम तक पहुँचाया और नक़्शा अपनी हद तक खींच कर रख दिया। एक–एक चीज़ महफ़ूज़ कर दी, बाल कैसे थे, आँखें कैसी थीं, दांत कैसे थे, नाक कैसी थी, हाथ कैसे थे, उंगलियाँ कैसी थीं, पेट कैसा था, पीठ कैसी थी, सीना कैसा था, सब एक–एक चीज़ मौजूद है यानी तस्वीर अगर कोई खींच सकता है तो इससे ज़ियादा नहीं खींच सकता है, जितना कि सहाबा–ए–किराम ने अल्फाज़ खींचकर दिखाया है ज़ब सरापाए रसूल सामने आयेगा तो पढ़ने वाला खुद सरापा महब्बत बन जाएगा कि यह है अस्ल हुस्न, बाक़ी तो सब गर्द है। (जारी)

उस को मिल ही नहीं सकता कभी तौहीद का जाम
जिस की नजरों से पूशीदा है रिसालत का मकाम

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

(पृष्ठ ३८ का शेष)

(आधारित) है, इसी लिए अल्लाह के रसूल (स०ल०) ने खुश खबरी सुना दी, अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए जिसने कोई मस्जिद बनाई, अल्लाह उसके लिए जन्नत में एक घर बनाएगा।

तमाम इन्सानों के बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जमीन पर तशरीफ लाए तो सबसे पहले जो इमारत बनाई वह इमारत खाना कअबः की थी– अल्लाह फरमाता है कि मस्जिदों को सिर्फ वही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं मस्जिद इबादतगाह है जहां मुसलमान पांच वक्त की नमाज़ अदा करते हैं, जहां अल्लाह का ज़िक्र करते हैं, और कुर्आन मजीद की तिलावत करते हैं।

मस्जिद तअलीमगाह हैं जहां पढ़ने पढ़ाने की महफिलें जमती हैं मस्जिद में खतीब वअज़ नसीहत करते हैं और उलमा दावत व इरशाद का फरीज़ा अन्जाम देते हैं।

मस्जिद अदालत की जगह है जहां क़ाज़ी झगड़ों के फ़ैसले सुनाता है, जहां मुफ्ती मसाएल के फतवे देता है, जहां फकीह लोगों को मसाएल समझाता है।

निकाह की मुबारक महफिलें भी मस्जिद में मुनअकिद होती हैं। मस्जिद समाजी ज़िन्दगी के छोटे बड़े सारे मआमलात के साथ एक तअल्लुक रखती है और उनको सही रुख देने में अपना रोल अदा करती है।

जिस ने इस दुन्या में अल्लाह की रज़ा के लिए कोई मस्जिद बनाई अल्लाह ने जन्नत में उसके लिए एक घर बनाया।

बहुत ग्रेट व्यक्तित्व

खुर्शीदुल इस्लाम

१८८८ में पवित्र नगरी मक्का में पीरों के एक परिवार में जन्मे अबुल कलाम आज़ाद का पालन–पोषण, परम्परागत गहरे धार्मिक माहौल, ठोस प्राचीन विद्वता तथा रहस्यवादी कठोर दीक्षा के तहत हुआ था। इन परम्पराओं में परवान चढ़ा अपनी उम्र से ज़ियादा बात करने वाला विलक्षण बुद्धि का यह बच्चा असाधारण बुद्धि और ज्ञान का एक संवेदी जवान बना। यदि वह चाहते आसानी से धार्मिक नेता बन सकते थे और अपने पिता के सच्चे वारिस बनते जिनकी भारत में अच्छी इज़्ज़त थी। किन्तु युवा विद्वान ने अपने लिए कठिन तथा चुनौतीपूर्ण रास्ता चुना, और भविष्य की घटनाओं ने साबित कर दिया कि उनके भाग्य में कुछ और ही था। बौद्धिक तथा व्यावहारिक जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने बड़ा नाम कमाया। वह अपनी आपबीती के सन्दर्भ में कहते हैं, "धर्म में, साहित्य में, राजनीति में, विचारों के राजमार्ग में, जिधर भी मुझे जाना पड़ा, मुझे अकेले जाना पड़ा। किसी भी पथ पर समय के खेमा तले मैं नहीं चला.. ...।" यह बनावट नहीं सच्चाई है। उन्होंने तकलीद से अपने को अलग रखा, और ज़िन्दगी के आसान रास्ते पर चलना पसन्द नहीं किया। वह अपनी आप बीती 'तज़किरः" में लिखते हैं :– "मेरी ज़िन्दगी के हालात कुछ भी हों मेरे अन्दर खराबी और अपूर्णता के खिलाफ एक एहसास था, और मैं रिवायत तथा सामन्यतः घिसे पिटे रास्ते से बचता रहा। दूसरों के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास मैंने कभी नहीं किया, किन्तु अपनी राह खुद तलाश की और अपने पदचिन्ह आने वालों के लिए छोड़े हैं।"

अल–हिलाल

वह जो भी दावा करते हैं, उनकी न सिर्फ तहरीर बल्कि उनकी पूरी ज़िन्दगी इसका सबूत पेश करती है। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक तीस वर्षों में उन्होंने 'अल–मिसबाह' 'लिसानुससिद्क़' 'अल–हिलाल', 'अलबलाग़', अनेक अख़बारों का सम्पादन किया। आख़िर के दो को शुरू से ही बड़ी लोकप्रियता मिली। 'अल–हिलाल' उनके धर्म और राजनीति पर विचारों का पुख़्ता माध्यम था। मौलाना सर सैयद के सामाजिक तथा धार्मिक लेखों से अधिक प्रभावित थे जिसने उन्हें सुधार और परिवर्तन के लिए उत्प्रेरित किया। इन तहरीरों ने उनके अन्दर एहसास पैदा किया कि आज की दुनिया में कोई समुदाय बिना समय की नयी चुनौतियों का सामना किये फल नहीं सकता। फलतः अल–हिलाल के ज़रिये उन्होंने भारतीय मुसलमासनों को समझाया कि वे ग़ैर इस्लामी तत्वों को छोड़ दें जिन्हे वे वर्षों से बिना समझे अपनाये हुए हैं और जिनसे उनके सामाजिक जीवन में ठहराव आ गया है। उन्होंने बार–बार अपने दृढ़ विश्वास को दोहराया कि गहरी तथा वास्तविक धार्मिक अनुभूतियाँ सच्ची मानवीय भावना को जगाती हैं इसलिए हिदायत और प्रेरणा के लिए धर्म पर निर्भरता मानव सेवा तथा धर्म के लिए वांछित रास्ता है, यदि ऐसा लगे कि धर्म सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में टकराव पैदा कर रहा है। ऐसा ग़लतफ़हमियों के कारण और धर्म के अनुयाइयों की गलती के कारण था। यह दो अलग–अलग चीज़ें हैं और इन्हें अलग–अलग रखा जाना चाहिए। हमारी दो तिहाई निराशायें इसलिए हैं कि हम इस बुनियादी फ़र्क को भूल जाते हैं। दावा और टकराव के सारे मतभेद त्रुटिपूर्ण समझ तथा धर्मों के अनुयाइयों के क्रिया कलाप के कारण हैं। धर्मों की शिक्षाओं में इस तरह का कोई मतभेद नहीं है।"

अल–हिलाल के सम्पादकीय लेखों ने भारतीय मुस्लिम को ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ खड़ा कर दिया। उन्होंने खिलाफत आन्दोलन,असहयोग आन्दोलन और अहिंसा की व्याख्या कुर्आनी तालीमात की रोशनी में की, और बताया कि इन आन्दोलनों को मज़बूत करना प्रत्येक मुसलमान की ड्यूटी है ताकि विदेशी शासन का तख़्ता पलटा जा सके। उन्होंने अल–हिलाल में लिखा :–

"राष्ट्रों के इतिहास में ऐसा समय आता है जब ज़िन्दा रहने की इच्छा पाप बन जाती है, और ऐसे में ज़िन्दा रहने से बड़ा कोई पाप नहीं है। ऐसे समय में जेल की सलाखों के पीछे रहने वालों की संख्या बढ़ जाती है। और हथकड़ी बनाने वालें की बन आती है।"

मौलाना आज़ाद ने अपने

पूरेजीवन का सातवाँ भाग ब्रिटिश जेल में गुज़ारा, लेकिन कोई मुश्किल उन्हें अपने इरादे व इज़हारे ख्याल से विचलित नहीं कर सकी। बड़ी से बड़ी परीक्षा की घड़ी और आज़माइश में उन्होंने अपूर्व साहस तथा सच्ची देशभक्ति का सबूत दिया। अपने ऐतिहासिक ट्रायल के दौरान ब्रिटिश अदालत के सामने उन्होंने ने कहा :–

"यदि अदालत की निगाह में यह घोषणायें जुर्म हैं, तो मैं मानता हूँ कि यह हमेशा मेरे मन और ध्यान में रही हैं। मैंने हज़ारों लोगों के सामने बार–बार यह बातें कहीं, और इस अदालत के सामने भी इन्हें दोहराने के लिए अपने को आतुर पाता हूँ और जब तक ज़िन्दा रहूँगा, दोहराता रहूँगा। अन्यथा मैं स्वयं अपने खिलाफ हूँ और खुदा तथा लोगों के सामने मुजरिम हूँ।"

हिन्दू–मुस्लिम एकता

मौलाना आज़ाद इस मत के थे कि बिना हिन्दू–मुस्लिम एकता के देश की समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता। निश्चय ही पूरी आज़ादी उनका मुख्य लक्ष्य था, लेकिन उन्हें इससे भीं प्यारी चीज़ हिन्दू–मुस्लिम एकता थी। खुशी की बात है कि खिलाफत आन्दोलन के दौरान हर जगह पूरी एकता और एकजुटता देखी गयी। लेकिन जल्दी ही बन्धन ढीला पड़ने लगा। मजलिसे खिलाफत की एक मीटिंग को सम्बोधित करते हुए उनहोंने कहा, "भारत के लिए, भारत की आज़ादी के लिए और सच्चाई तथा कर्तव्य परायणता के लिए हिन्दू–मुस्लिम एकता ज़रूरी है।" १६२३ में कांग्रेस अधिवेशन में मौलाना आज़ाद ने कहा, "अगर एक फ़रिश्ता आसमान से उतर कर आये और कुतुबमीनार की ऊँचाई से एलान करे, कि हिन्दू–मुस्लिम एकता से दस्तबरदार हो जाओ २४ घंटे के अन्दर तुमको स्वराज मिल जायेगा।" तो मैं स्वराज से इन्कार कर दूँगा पर अपनी बात से एक इंच नहीं हटूँगा। अगर स्वराज देर से मिलता है तो इसका असर केवल इन्डिया पर पड़ेगा, जबकि हमारी एकता के खात्मः से पूरे मानव–संसार को नुकसान होगा।"

बेमिसाल स्टाइल

व्यापकता, शानदार– मौलाना का प्रतिभा को अभिव्यक्तित्व के लिए उपयुक्त शब्द हो सकते हैं। जो भी उनके सम्पर्क में आता इनसे प्रभावित हुए बिना न रहता। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा धर्मशास्त्र तथा इस्लामी विद्या में हुई। लेकिन ज्ञान के लिए उनकी कभी न बुझने वाली प्यास उन्हें अध्ययन के आसाधारण क्षेत्रों तक ले गयी। १६०४ में, जब वह मुश्किल से सोलह साल के थे, उन्होंने वयोवृद्ध विद्वान को 'लिसानुस्सिद्क' अख़बार में अपने लेखों से हैरत में डाल दिया। बड़े होकर उन्होंने ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में निपुणता (महारत) हासिल की। साहित्य हो या धर्म, दर्शनशास्त्र हो या तर्कशास्त्र, राजनीति हो या साइंस, और पूरब हो या पच्छिम उन्होंने हर एक में दक्षता दिखाई।

अपने महान विद्वता, ज़िन्दगी की मुश्किलात जो कभी कभी लीडर्स और साहित्यकारों को पस्त कर देती हैं, के बावजूद मौलाना साहिब ने अपने नज़रिये की उदारता और जन्मजात दरियादिली को बरकरार रखा। उनके अनेक सहधर्मवादियों की दुश्मनी सर्वविदित है लेकिन उन्होंने अपनी बदगोई करने वालों के साथ भी उदारता का व्यवहार किया और नफरत का जवाब फराखदिली से दिया।

(पृष्ठ २४ का शेष)

प्रश्न : लगाए हुए दांतों के साथ वुज़ू हो जाता है या वुज़ू के वक्त उनका निकालना ज़रूरी है?

उत्तर : लगाए हुए दांतों के साथ वुज़ू हो जाता है वुज़ू के वक्त उनका निकालना ज़रूरी नहीं है।

प्रश्न : गोबर की राख पाक है या नापाक?

उत्तर : गोबर की राख पाक है।

अपने प्रश्न साफ, स्पष्ट तथा पन्ने के एक ओर ही लिखा करें। जटिल मतभेद वाले प्रश्न भेजने से बचें।

(इदारा)

Mohd. Saleem
Mob. : 9415782827
(R) 268177, 254796

New King Shoes

Bata, Liberty
Action, Red Chief

Shop No. 8-9, New Market,
Nishat Ganj, Lucknow-226006

वैदिक काल की सभ्यता

इतिहास के पन्नों से

इदारा

पिछले अंक के आगे

(१०) सामुदायिक भावना का जागरण– जाति–प्रथा ने सामुदायिक भावना के जागरण में बड़ी सहायता दी है। जाति का प्रत्येक सदस्य अपनी जाति की उन्नति चाहता है और उसके लिये प्रयत्नशील रहता है। प्रत्येक जाति के लोग अपनी जाति के उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के संगठन बना लेते हैं और सामुहिक रीति से अपनी जाति के उन्नति के लिए प्रयत्न करते हैं।

(११) समाज के विकास तथा उसकी सुरक्षा में सहायक– जाति–प्रथा हिन्दू समाज को उन्नति तथा उसे सुरक्षित रखने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। जाति–प्रथा ने समस्त हिंदू–जाति को एक सूत्र में बांध रक्खा है और जब कभी विदेशी आक्रमणकारियों ने हिंदू–जाति को विनष्ट करने का प्रयत्न किया तब हिन्दुओं ने अपनी जाति–प्रथा के बंधनों को अत्यन्त कठोर बनाकर अपने धर्म तथा अपनी संस्कृति की रक्षा की। हिन्दुओं ने विदेशियों को म्लेच्छ कहा और अपने रक्त की शुद्धता पर बल देकर उसे सुरक्षित रखने का यथा–शक्ति प्रयत्न किया।

(१२) श्रम विभाजन की सुविधा– जाति'प्रथा ने श्रम–विभाजन की भी सुविधा पैदा कर दी है। यद्यपि जाति–प्रथा व्यवसाय को द्योतक नहीं है परन्तु अनेक उपजातियों के निर्माण का आधार व्यवसाय ही रहा है; बढ़ई, लोहार, कुम्हार, मेहतर आदि। जाति–प्रथा ने यह विश्वास पैदा कर दिया है कि पूर्व–जन्म के कर्मों के अनुसार ही इस जन्म में प्रत्येक व्यक्ति का कार्य निश्चित होता है। इस विश्वास के कारण ही मेहतर आदि नीच से नीच कार्य को संतोषपूर्वक करते हैं। इस विश्वास के कारण लोग अच्छे–अच्छे कर्मों के करने का प्रयत्न करते हैं जिससे जन्म में वे किसी ऊँची जाति में जन्म लें। (अनर्थ तर्क है।)

(१३) शिक्षा का कार्य– जाति–प्रथा शताब्दियों से शिक्षा के कार्य में भी बड़ा योग दे रही है। जाति–प्रथा द्वारा अनेक व्यवसायों का निर्माण हो जाता है अर्थात् जाति–प्रथा ने अनेक पेशों को परम्परागत बना दिया है। जहाँ पेशे वंशानुगत हैं वहाँ व्यावसायिक शिक्षा घर में ही मिल जाती है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस जाति–प्रथा की इतनी तीव्र आलोचना की जाती है व गुणों से रिक्त न थी। इसी से स्मिथ महोदय ने लिखा है, "यह संस्था जो सहस्रों वर्षों से बनी चली आ रही है और प्रबल विरोध होने पर भी इस प्रयाद्वीप में कमोरिन अन्तरीप तक फैल गई, अवश्य ही गुण–सम्पन्न रही होगी। अन्यथा इसका अस्तित्व बना न रहता और भारत को सीमा ने अन्दर सर्वत्र प्रचार न हुआ होता।"

जाति–प्रथा से हानियाँ– जाति–प्रथा ने धीरे–धीरे ऐसा जटिल रूप धारण कर लिया कि हिन्दू–समाज को इससे बड़ी हानियाँ हुईं। जाति–प्रथा के प्रमुख दोष निम्नांकित है :–

(१) व्यवसाय के परिवर्तन में कठिनाई– जाति–प्रथा से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के पेशे का निश्चय होता है। अतएव किसी अन्य पेशे को करने में उसे कठिनाई होती है। उदाहरण के लिए एक ब्राह्मण चमड़े का व्यवसाय न करेगा चाहे उसे उस व्यवसाय से कितना ही अधिक लाभ क्यों न हो।

(२) कार्य–कुशलता में बाधा– जाति–प्रथा में व्यवसाय का निश्चय योग्यता तथा क्षमता के आधार पर नहीं होता वरन् जन्म के आधार पर होता है। अतएव चाहे उस आदमी में अपने परम्परागत व्यवसाय को करने की क्षमता तथा रुचि हो अथवा नहीं, उसे विवश होकर उस कार्य को करना पड़ता है। इससे कार्य–कुशलता में बाधा पड़ती है।

(३) ऊँची जाति के अत्याचार– जाति–प्रथा समाज को ऊँच–नीच कोटियों में बांध देती है। ब्राह्मण तथा क्षत्रिय अपने को ऊँची जाति का और वैश्यों तथा शुद्रों को नीची जाति का समझते हैं। इससे वे अपनी उच्चता पर बड़ा गर्वकरते हैं और निम्न जाति वालों के साथ भाँति–भाँति के अत्याचार करते हैं। शुद्रों के साथ प्रायः बड़े भयानक अत्याचार किये गये हैं।

(४) निम्न जाति द्वारा धर्म परिवर्तन– ऊँची जाति के लोगों के

अत्याचारों के कारण निम्न–जाति के सहस्रों व्यक्ति ने हिन्दू–धर्म को छोड़ दिया और वे ईसाई तथा मुसलमान बन गये, क्योंकि इन धर्मों में उन्हें समानता का स्थान मिल गया था।

(५) अश्पृश्यता– जाति–प्रथा के कारण ही हिन्दू–समाज में अस्पृश्यता उत्पन्न हो गई। शूद्र लोग हिन्दू समाज़ में बड़ी घृणा की दृष्टि से देखे जाते हैं और उन्हें छूना पाप समझा जाता है। अस्पृश्यता हिन्दू–समाज का सबसे बड़ा कलंक है।

(६) जातिवाद का प्रयोग– जाति–प्रथा ने हिन्दू–समाज को अनेक वर्गों में विभक्त कर दिया है जो एक–दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और ईर्ष्या–द्वेष रखते हैं जातिवाद हिन्दू जाति के लिए अभिषाप सा बन गया है।

(७) राष्ट्रीयता में बाधक– जाति–प्रथा ने जातिवाद को जन्म दिया है जिससे लोग अपनी जाति के ऊपर नहीं उठ पाते। वे प्रायः राष्ट्र के हित को भूल जाते हैं और अपनी जाति के हित का सर्वोपरि रखते हैं। जाति–प्रथा ने ऊँच–नीच के भाव पैदा कर हमारे समाज को छिन्न–छिन्न भिन्न कर दिया है, जिससे राष्ट्रीयता की भावना के विकास में बड़ी कठिनाई पड़ती है।

(८) अनेक सामाजिक समस्याओं का कारण– जाति–प्रथा के कारण हमारे समाज में अनेक समस्याएँ उठ खड़ी हो गई हैं। बाल विवाह, दहेज प्रथा विधवा विवाह पर रोक आदि कुप्रथाएँ जाति प्रथा के कारण ही हिन्दू समाज में पैदा हो गई हैं।

जाति–प्रथा की वर्तमान स्थिति– आधुनिक काल में धीरे–धीरे जाति–प्रथा के बंधन पड़ते जा रहे हैं। पाश्चात्य शिक्षा, औद्योगिक उन्नति, स्त्रियों की शिक्षा, यातायात के साधनों में वृद्धि, विज्ञान की उन्नति, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक आन्दोलन से जाति–प्रथा के बन्धन ढीले करने में बड़ी सहायता मिली है। सरकार ने भी जाति–पात के भेद–भाव को दूर करने में बड़ा योग दिया है। जाति–प्रथा के बन्धन ढीले होने का परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मणों का प्रभुत्व कम हो गया है, विवाह सम्बन्धी नियम बदलते जा रहे हैं। भोजन–सम्बन्धी प्रतिबन्ध हटते जा रहे हैं और सहभोज धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है। व्यवसाय–सम्बन्धी प्रतिबन्ध भी हटते जा रहे हैं और हरिजनों की दशा में धीरे–धीरे सुधार होता जा रहा है।

आश्रम का अर्थ–आश्रम शब्द संस्कृत की श्रम धातु से बना है जिसका अर्थ होता है प्रयास अथवा परिश्रम करना। आश्रम जीवन का वह विभाजन है जिसमें मनुष्य प्रयास अथवा परिश्रम करता है।

चार आश्रम– आश्रम चार हैं अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ तथा सन्यास। जब बालक का यज्ञोपवीत हो जाता था वह गुरू के आश्रम में विद्याध्ययन करने चला जाता था और वहाँ पर ब्रह्मचर्य तथा तप का जीवन व्यतीत करता था। इसी को ब्रह्मचर्याश्रम कहते थे। विद्याध्ययन के पश्चात ब्रह्मचारी अपने घर लौट आता था और अपना विवाह कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता था। इसी को ग्रहस्थाश्रम कहते थे। व्यावहारिक दृष्टि से ग्रहस्थाश्रम का सबसे अधिक महत्व था क्योंकि अन्य तीन आश्रमों के लोगों का भरण–पोषण गृहस्थ ही करता था। गृहस्थाश्रम में सांसारिक सुखों का उपयोग किया जाता था, परन्तु कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन भी करना पड़ता था। गृहस्थाश्रम के बाद वानप्रस्थाश्रम आरम्भ होता था। इस आश्रम में जंगल में जाकर तपस्या तथा चिन्तन करके वह सांसारिक बन्धनों से अपने को मुक्त करने का प्रयत्न करता था। अन्त में वृद्ध हो जाने पर वह अपनी कुटी छोड़कर सन्यासाश्रम में प्रवेश करता था और परिब्राजक बन जाता था। इस अवस्था में वह संसार के सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता था।

आश्रम व्यवस्था का आधर– आश्रम व्यवस्था के अनुसार जीवन का बड़ा ही वैज्ञानिक विभाजन किया गया था और इससे व्यक्ति तथा समाज दोनों का ही कल्याण था। हमारे चार ऋण इस व्यवस्था के आधार पर बतलाये गये है। यह चार ऋण देवताओं के, ऋषियों के, पितरों तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति होते हैं। ब्रह्मचर्या श्रम में रहकर ज्ञानार्जन करके वह ऋषियों के ऋण से मुक्त होता था। वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर औश्र देवताओं की पूजा तथा यज्ञ कर देवताओं के ऋण से मुक्त होता था। सन्यासाश्रम में प्रवेश कर अपना सारा समय मानव कल्याण में लगाकर मनुष्यश लोगों के ऋण से मुक्त होता था। आश्रम का सम्बन्ध चारों पुरुषाथों अर्थात् धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष से भी माना जाता है। ब्रह्मचर्य का सम्बन्ध धर्म से, गृहस्थ का सम्बन्ध अर्थ तथा काम से और वानप्रस्थ तथा सन्यास का सम्बन्ध मोक्ष से था।

(यह विभाजन ब्रहमणों तक सीमित था)

जराइम

अब्दुल हन्नान सिवानी नदवी

जराएम की घटनाओं की अधिकता मुख्यकर स्त्रियों और लड़कियों के साथ छेड़ छाड़ तथा उनके साथ दुराचार की ऐसी घटनाएं हो रही हैं जिसने हमें ही नहीं बल्कि हर भारती नागरिक को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर इस पर किस तरह से क़ाबू पाया जाय। और क्या प्रक्रिया अख्तियार की जाए जो समाज को बुराई से सुरक्षित रखने में कारगर हो।

एक अंग्रेजी स्कूल की अध्यापिका कहती हैं कि अश्लील संचार माध्यम अश्लील समाज को बढ़ावा देता है। उनकी यह बात काफी हद तक सही है लेकिन दुर्भाग्य यह है कि जब भी नए किस्म के जराइम पेश आते हैं तो वहां भारतीय कानून अपने आपको मजबूर पाता है। दूसरी कानूनी धाराओं के अन्तर्गत अपराधियों को कुछ दिनों तक तो जेल में डाल दिया जाता है लेकिन बाद में अपराधी छूट जाते हैं और अपने काम में लग जाते हैं। शरीर व्यापार करने वाली हजारों लड़कियों की मिसाल दी जाती है जो कई कई बार जेल गईं मगर फिर जमानत मिल गई और वह अपने काम में दोबारा लग गईं और पुलिस भी अपने आप को बेबस महसूस करती हैं। फिर क्या जेल में डालने से सुधार सम्भव है? अगर हम भारत के पूरे जेलों पर नजर डालें तो मालूम होगा कि यहां भी एक दुन्या आबाद है और दशा तो इतनी बिगड़ चुकी है कि अपराध बढ़ रहे हैं और जेल कम पड़ती जा रही है और अब तो जेल में भी इस तरह की खबरें कभी कभी मिल जाती हैं। आज हमें कहने में जरा भी संकोच नहीं कि विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्थाएं भी इस प्रकार के अपराधों के रोकने में नाकाम हैं बल्कि इस प्रकार के अपराधों को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभा रही हैं और यह कहना कि तालीम की कमी के कारण घटनाएं हो रही हैं समझ से बाहर है कि कौन सी तालीम की बात की जा रही है। क्या कोई आसमानी तालीम उतरेगी जिसे पढ़ कर चोर चोरी करना, क़ातिल कत्ल करना, दुराचारी दुराचार करना और कुकर्म करने वाला कुकर्म करना छोड़ दे।

यदि इस सच्चाई को मानलिया जाए कि कोई भी दुर्घटना अपने पीछे बहुत से कारण रखती है तो हमें मालूम होना चाहिए कि क़त्ल भी यूं ही नहीं होते, हालात, समाज, संचार माध्यम, आस पास का माहौल, जज़्बात भड़काने वाली तस्वीरें, अश्लील गाने, फिल्में यह तमाम के तमाम एक आदमी को अपराधी बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शराब नशीली दवाएं, अश्लील लिट्रेचर और कुछ भी आसानी से सुलभ हैं। नाजाएज पैसे भी कमाने के हजार हा हजार तरीके मौजूद हैं जब तक समाज को इन जराइम और इन अश्लील सोच से आजाद नहीं किया जाएगा, उस समय तक न अपराध कम हो सकते हैं और न किसी अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है।

पचास साल से अधिक समय गुजर चुका है और अभी तक कोई कठोर कानून नहीं बन सका। इस हकीकत (तथ्य) को मान लेने के बावजूद कि भारत न्यूक्लियाई तकनीक रखता है और उस ने परिवहन यातायात और आधुनिक उन्नति में एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है लेकिन सबके बावजूद यह बात प्रत्यक्ष रूप से जाहिर है कि भारतीय नागरिक भारत में शान्ति से नहीं रह पा रहा है और अगर एक हिन्दुस्तानी लड़की की इसमत (सतीत्व) अपने ही देश में सुरक्षित न रह सके तो क्या फायदा तकनीक और न्यूक्लियाई हथियारों को हासिल करने का।

अपराध दो चीजों से रोका जा सकता है। सबसे पहली चीज धर्म है कि धर्म की कल्पना जितनी ही मन में बैठी होगी उतना ही वह अपराधों से बचेगा लेकिन उसके लिए भी जरूरी है कि वह धर्म खुद की बुराई से रोकने और अपराधों पर काबू पाने में अहम भूमिका अदा करे और उसके पास स्पष्ट आदेश भी हों। बड़े अफसोस की बात है कि तमाम धर्मों में केवल इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो इन तमाम बुराइयों को न केवल नकारता है बल्कि ऐसा करने वालों के खिलाफ कठोर से कठोर कार्यवाही को भी उचित ठहराता है। दूसरी चीज हुकूमत है हुकूमत हालात और घटनाओं की समीक्षा (जाएजा) करती रहे और समय समय पर सख्त से सख्त फैसले लेती रहे। दुर्भाग्य यह है कि भारत को अभी तक एक भी ऐसा नेता न मिल सका जो सख्त से सख्त फैसला लेने पर शक्तिमान

(कादिर) हो। अगर नेता मिला तो पार्टी ऐसी मिली जिसने इस तरह के फैसले लेने से रोकने में अहम भूमिका निभायी।

मानवाधिकार के नाम पर काम करने वाली विभिन्न संस्थाओं ने भी बलातकार और अन्य प्रकार के समाजी अपराधों को बढ़ावा देने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की। आजादी और तरह तरह की आजादी का ऐसा शोर मचाया कि आज मानवी मूल्यों (इन्सानी एकदार) की कल्पना गुम होकर रह गई। जब भी कोई बात की जा है तो आजादी और उसका बुनियादी हक कह कर समाज में इस कदर शोर मचाया जाता है और बयान बाजी की जाती है कि अस्ल मसअले पर तवज्जुह नहीं रह पाती। क्या यह जम्हूरी निजाम (लोकतंत्र) की नाकामी की दलील नहीं है कि मुआशरती मजबूरियों की वजह से, समाजिक विवशता के कारण कहीं कहीं अब तक सती प्रथा जारी है। आज भी कहीं कहीं ऊंची जात वाला अपने ख्याल में नीचजात की औरत या लड़की को नंगा घुमा देता है और पुलिस और कानून खाना पूरी के अलावा कुछ नहीं कर पाते।

जिस समाज में जिस्म फरोशी (वेश्या व्यवसाय) के लिए सर्टीफिकेट दिया जाता हो और उसके महल्ले और इलाके (क्षेत्र) मशहूर हों, अमीरों और पूंजीपतियों की चाहतों को पूरा करने के लिए बड़े–बड़े भोग विलास वाले नाइट कलब खोले जाते हों और उस को फरोग (उन्नति) दिया जाता हो, जिस समाज में शराब को एक सनअत (उद्योग) का दर्जा हासिल हो। जिस समाज में एक लड़की और लड़के को यह हक हासिल हो कि वह घर से भाग कर खान्दान की इज्जत व आबू और धर्म व मजहब की परवाह किये बिना शादी कर ले और इसे उनकी आजादी का नाम दिया जाता हो जहां फिल्में और विशेषकर ऐसी फिल्में जो हैजान अंगेज़ (काम इच्छा को भड़काने वाली) हों और फिक्र व ख्याल की आजादी का नाम देकर तरक्की दी जा रही हो। जहां ऐसी जम्हूरियत (लोकतंत्र) हो कि ऐसे जराइम के खिलाफ कोई फैसला न लिया जा सकता हो ऐसे समाज में कैसे हो सकता है कि उसमें जराइम (अपराध) न हों। जब मर्द, औरतों, लड़कों, लड़कियों को ऐसी आजादी मिले कि वह सब कुछ कर सकते हों इस पर उन को हुकूमत की सरपरस्ती और कानून की मदद मिलती हो, वहां कैसे मुम्किन है कि जराइम रुक जाएं। जहां के स्कूलों कालिजों में मखलूत (मिली जुली) तअलीम हो, वहां किस तरह सुधार मुम्किन हो सकेगा? जिस समाज में गन्दे गाने कला बन गये हों, जहां फैशन और माडलिंग एक उद्योग बन जाए, बड़े–बड़े सियासी लोग (राजनीतिज्ञ) उसमें भाग लेने लगें अखबारात और मीडिया वाले उसके प्रचार में मुकाबला करने लगें और इस सब को आजादी (स्वतंत्रता) कहें वहां सुधार कैसे हो?

इस हकीकत से कौन इन्कार कर सकता है कि जराइम और इस्मतदरी (सतीत्व हरण) जैसे वाकिआत को बढ़ावा देने में फिल्में, टीवी सीरियल, गन्दी किताबें, औरतों और लड़कियों को नामुनासिब (अनुचित) पहनावे, अधनंगे कपड़ों में घूमना यह सब अहम रोल अदा करते हैं। क्या हकूमत और हुकूमती इदारे इस हकीकत (वास्तविकता) को जानते हुए इस पर पाबन्दी (प्रतिबन्ध) लगा सकते हैं जहां चोर का हाथ काटना तो जुर्म ठहरे, कातिल को कत्ल की सजा देना मानवता (इन्सानियत) के खिलाफ समझा जाए, जानी (व्यभिचारी) को मौत की सजा को इन्सानी आजादी के खिलाफ समझा जाए लेकिन पूरा समाज भयभीत रहे, लड़कियों का सड़क पर चलना दुश्वार हो तो इस में कोई हरज न समझा जाए। लड़कियां डांस बारों में जाकर पैसे कमाएं और इन बुराइयों को रोकने के लिए कोई कानून न हो ऐसे में समाज का सुधार कैसे हो सकता है। क्या यह हकीकत नहीं है कि भारत का भारी भरकम लोकतंत्र एक औरत को संरक्षण (तहफ्फुज़) देने में नाकाम रहा है?

पश्चिमी देशों (मग्रिब) ने जराइम रोकने के लिए अपनी पब्लिक को बड़ी सहूलतें दी हैं यहां तक कि मां बाप अपने छोटे सपूतों के एक फोन पर अरेस्ट हो सकते हैं तो साथ ही वहां दूसरी समाजी बुराइयां ऐसी फैलीं कि उनके कारण नित नये रोग सामने आते जा रहे हैं। आज हाल यह है कि कुछ मुल्क तो ऐसे हैं जहां की जियादा तर आबादी पर एडस का खतरा मंडला रहा है और उनमें हमारा भारत भी है।

जो लोग ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं उन पर शैतान का काबू नहीं चलता। (पवित्र कुर्आन १६:९९)

उर्दू जुबां

शाहिद रुदौलवी

हजारों दास्तानों में निराली दास्तां हूं मैं।
है जिस से हुस्ने गोयाई, वही उर्दू जुबां हूं मैं।।
मेरे ही रोजमर्रा ने जुबा को सादगी बख़्शी,
मेरे ही तर्ज ने गूंगे लबों को ताजगी बख़्शी,
मेरी ही फिक्र ने मुर्दा दिलों को जिन्दगी बख़्शी,
है जिससे जिन्दगी का साज वह सोजे बयां हूं मैं।
है जिससे हुस्ने गोयाई, वही उर्दू जुबां हूं मैं।।
मेरी वुसअ़त से सरगर्दां समन्दर के किनारे हैं,
मेरी तानों के दीपक से सितारों के शरारे हैं,
मेरी महफिल से रंगारंग दुन्या के नज़ारे हैं,
शक व शुबहात के बादल में इक बर्के रवां हूं मैं।
है जिससे हुस्ने गोयाई .वही उर्दू जुबां हूं मैं।।
मेरी तहजीब से घबरा गए मेरे वतन वाले,
हसद की आग में जलने लगे चाहे ज़कन वाले,
मिटाना चाहते थे मिस्ले सब्जा खुद चमन वाले,
मगर अब तक न मिट पाया किसी से वह निशां हूं मैं।
है जिस से हुस्ने गोयाई वही उर्दू जुबां हूं मैं।।
किसी मअसूम के दिल का धड़कना मुझ में पिन्हां है,
किसी दिल के लिए दिल का धड़कना मुझ में पिन्हां है।
किसी के शोल–ए–दिल का भड़कना मुझ में पिन्हां है,
बदलती रंग दुन्या का बदलता आसमां हूं मैं।
है जिससे हुस्ने गोयाई वही उर्दू जुबां हूं मैं
लिबासे नागरी में मैं तुम्हारे पास आई हूं
सुनो ताकि मेरी बातें बदल कर भेस आई हूं
न जानो गैर तुम मुझ को बताने यह मैं आई हूं
टटोलो दिल को अपने तुम बताओ अब कहां हूं मैं
है जिस से हुस्ने गोयाई वही उर्दू जुबां हूं मैं
अदब के गुल महकते हैं मेरी आगोश में आकर
चिरागे दिल दमकते हैं मेरी आगोश में आकर
खयाले नव चमकते हैं मेरी आगोश में आकर
सुखन संजी में यक्ता हूं अभी शाहिद जवां हूं मैं
है जिससे हुस्ने गोयाई वही उर्दू जुबां हूं मैं।।

हिन्दी रूपान्तर : मास्टर मुहम्मद इलियास, रूदौलवी

''मुझे यह डर है कि पूरब से पच्छिम तक मानवता की जो बारात आधुनिक सभ्यता के साथ निकल रही है, कहीं यह बिन दूल्हा के बारात न हो।

मानवता की इस बारात का दूल्हा मानव है।''

(पयामे इन्सानियत)

(पृष्ठ ४० का शेष)

● यहूदी एजेंसी की खुफ़िया रिपोर्ट की वेबसाइट के अनुसार फ्रांस में रहने वाले यहूदियों की एक बड़ी संख्या ने इस्लाम कुबूल कर लिया है। पिछले पांच वर्षों में इस रूझान में बहुत तेजी आई है। एजेंसी ने नौजवानों में बढ़ते हुए इस्लाम स्वीकार करने के रुझान से परेशान होकर यहूदी मार्ग दर्शकों के सामने यह समस्या पेश की है ताकि इस बढ़ते हुए रुझान को रोकने के लिए उचित कार्यवाही करने पर गौर किया जाए। खुफिया रिपोर्टों ने इस बात को भी स्पष्ट किया है कि अमेरिका के इस्लाम विरोधी अभियान शुरू होने के कारण यूरोप में दीने इस्लाम की वास्तविकता जानने के लिए शिक्षित वर्ग इस्लामियात का अध्ययन कर रहा है। अतः कुर्आन का अनुवाद और इस्लाम पर लिखी जाने वाली अंग्रेजी पुस्तकों की मांग बढ़ रही है और शैक्षिक वर्गों में इस की लोकप्रियता रोजबरोज बढ़ रही है जिससे यहूदी लाबी परेशान है।

समाजी ख़िदमतें और मस्जिदें

सैयद मुहम्मद तारिक नदवी

आज जबकि हम सब अपने आप को मुसलमान कहने पर फख्र (गर्व) महसूस करते हैं, क्या हमने यह भी सोचा है कि हमको इस्लामी शिक्षा से किस क़दर जानकारी है और हम इस्लाम की वास्तविक रूह से किस कदर करीब हैं।

इस्लाम रस्म व रिवाज का मजमूआ (समूह) नहीं है कि उन्हें जैसे तैसे पूरा किया जाए और यूं ही लपेटकर किनारे लगा दिया जाए बल्कि यह एक निज़ामे ज़िन्दगी (जीवन व्यवस्था) है जिसके दो बुन्यादी स्तंभ हैं :

(अ) हुकूकुल्लाह

(ब) हुकूकुल इबाद

लिहाज़ा मुस्लिम क़ौम की हैसियत से हमारे ऊपर दो ज़िम्मेदारियां हैं –

१. अल्लाह के हुकूक़ अदा करना।

२. बन्दों के हुकूक़ अदा करना।

चूंकि इस्लाम में आधे या तिहाई का कोई उसूल (नियम) नहीं बल्कि पूरे इस्लाम में दाख़िल होकर ही मुसलमान कामरानी व कामयाबी से हमकनार हो सकते हैं– इरशादबारी तआला है "इस्लाम में पूरी तरह दाखिल हो जाओ और शैतान की ताबेदारी न करो। इसलिए इन दोनों में से किसी एक हक़ के सिलसिले में मामूली लापरवाही हमारी तबाही का सबब बन सकती है। आइये अब हम इस बात पर ध्यान दें और गौर करें कि आया हम इस्लामी तालीमात (शिक्षा) के मुताबिक अपने ऊपर आएद हुकूक की अदाएगी कर रहे हैं या नहीं? और अगर खुदा ना खुवास्ता हमसे किसी क़िस्म की कोताही हो रही है तो हम इसका इज़ाला (भरपाई) किस तरह से कर सकते हैं।

अगर गहरी नजर से हम मुस्लिम समाज का जाइजा लें तो नजर आता है कि हम अल्लाह और बन्दों के हुकूक की अदाएगी में कोताही कर रहे हैं। हमारे इस दावे पर अगर आपको किसी किस्म का एतराज (आपत्ति) हो तो आप मस्जिदों, हमारी आबादियों हमारे अपने इदारों का जाइजा लीजिए कि इबादात, मआमलात और तालीम में किस मुकाम में पहुंच चुके हैं, गुरबत है तो हमारी कौम में, अनपढ़ लोगों की बढ़ी हुई संख्या हमारे यहां और बद इन्तिज़ामी है तो वह भी हमारे यहां मौजूदह जमाने में मुस्लिम समाज के पास तीन अहम और बुन्यादी जराए (साधन) हैं जिन के सही इस्तेमाल से दीन इस्लाम को भली भांति समझा और अमल में लाया जा सकता है :–

१. हमारी मस्जिदें

२. हमारे दीनी मदरसे

३. आधुनिक विद्यालय जहां दीनी शिक्षा का प्रबन्ध हो।

इस समय न.२ और नं. ३ छोड़कर नं. १ हमारा विषय है – आज हम मस्जिदों की दीनी हैसियत से अपरिचित और उसके तक़ाज़ों की तरफ से लापरवाह हैं, अगरचि हम मस्जिदों को आदर सम्मान देते हैं लेकिन उसके हुकूक की अदाएगी की हमें चिन्ता नहीं, हमे इस बात का भी यक़ीन (विश्वास) है कि मस्जिदें हमारी कामयाबी (सफलता) की भी जामिन हैं, फिर भी हम मस्जिद के तअल्लुक से अमली कोताहियों के दलदल में फंसे हुए हैं, हम मस्जिद के नाम पर सरकटाने का हौसला रखते हैं लेकिन मस्जिद में सर झुकाना हम बोझ समझते हैं।

मस्जिद तो बना दी शब भर में
ईमां की हरारत वालों ने
मन अपना पुराना पापी था बरसों
में नमाजी बन न सका

मस्जिद की फ़ज़ीलत व अहमियत

इस्लामी समाज में मस्जिदों की अहमियत (महत्वता) सिर्फ उसी कदर नहीं है जिस कदर दूसरी कौमों में उनकी इबादतगाहों (पूजा स्थलों) की होती है बल्कि उन मस्जिदों का पूरे इस्लामी जीवन व्यवस्था से गहरा और अटूट रिश्ता है।

इस्लामी समाज में मस्जिदों का स्थान ठीक वही है जो मनुष्य के शरीर में दिल का स्थान है, हदीस शरीफ में है कि बेशक शरीर में गोश्त का एक टुकड़ा है जब वह ठीक होगा तो सारा शरीर ठीक होगा जब वह खराब होगा तो सारा शरीर खराब होगा, सुन लो वह दिल है अर्थात जिस प्रकार दिल के ठीक होने का आधार शरीर के ठीक होने पर है उसी प्रकार मस्जिद का निर्माण और उसके उचित प्रयोग पर आखिरत की कामयाबी मुनहसिर

(शेष पृष्ठ ३० पर)

इस्लामी समाज की चित्रकारी

और इस्लामी संघटनें

मुहम्मद जसीमुद्दीन कासिमी

वर्तमान काल में हर कौम अपने महत्व तथा भव्य भविष्य की स्थापना के लिए अपने बीते इतिहास और पूर्वजों की कृतियां दुहरा रही है। एक कौम के रूप में मुसलमानों की स्थिति जो कुछ दुन्या में बाकी है, उसका आधार भी पूर्वजों की भव्य कृतियों ही पर है।

यह वास्तविक्ता उज्ज्वल दिवस के प्रकार प्रत्यक्ष तथा स्पष्ट है कि दारूल उलूम देवबन्द ने उपमहाद्वीप (बर्रे सगीर) के मुसलमानों को धार्मिक जीवन (दीनी जिन्दगी) द्वारा श्रेष्ठ स्थान पर पहुंचाने में कीर्ति पूर्ण कार्य किया है। यह न केवल अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है अपितु बौद्धिक विकास, सांस्कृति उन्नति, सामुदायिक साहस (मिल्ली हौसिला) का एक ऐसा केन्द्र भी है जिससे शुद्ध इस्लामिक ज्ञान तथा उच्च आचरण पर उपमहाद्वीप के मुसलमानों को सदैव भरोसा तथा गर्व रहा है। (उलमा) के धर्म प्रसारणीय प्रयासों, सौधारिक चेष्ठाओं से देश के कोने कोने में रहने वाले मुसलमानों के जीवन से बिदआत व खुराफात (अनर्थ बातें) तथा कुप्रथाओं का विनाश होकर इस्लामी समाज का सुधार हुआ है। दारूल उलूम देवबन्द ने उन मुसलमानों को जो अपनी अचेतना के कारण कुर्आन व हदीस से दूर हो गये थे। पुनः किताब व सुन्नत से जोड़ कर इस्लाम के मौलिक ज्ञान से रूचि उत्पन्न कर के अन्धाविश्वास अनेकेश्वरवाद तथा बिदआत से शुद्ध किया और उनके शरीर में शुद्ध दीनी विश्वास का शुद्ध रक्त प्रवेश कर दिया।

नदवतुल उलमा आन्दोलन ने एक ही धर्म इस्लाम के मानने वालों को पारस्परिक टन्टों से बचाने, अर्थात मुस्लिम एकता और इस्लामी भाईचारे की भावनाओं को विकसित करने के कार्य को अपना उद्देश्य बनाया और इस भव्य अभिप्राय को पूरा करने के लिए ऐसे विद्वान (उलमा) तथा धर्म प्रचारक (मुबल्लिगीन) स्वयं बनाने का निर्णय लिया जो श्रम, (जफाकशी) प्राणोत्सर्ग (जांनिसारी) के गुणों से युक्त हों ताकि उनके धर्म प्रचार से मुसलमान अमौलिक बातों में न उलझ कर मौलिक सिद्धान्तों और उसके सार से सम्बन्ध स्थापित करें तथा उनमें इस्लामी भाईचारे की भावनाएं उत्पन्न हो। आंशिक मतभेदों और सामुदायिक विवादों से बचने वाले विद्वानों (उलमा) का जो प्रभाव मुसलमानों के धार्मिक स्वभाव (दीनी मिजाज) पर पड़ सकता है वह प्रत्यक्ष है कि ऐसे उलमा मुसलमानों के धार्मिक जीवन (मजहबी जिन्दगी) में बदलाव का एक प्रभावशाली साधन बनेंगे। अतएव दारूल उलूम नदवतुल उलमा से निकलने वाले उलमा मिल्लत के लिए एक बहुमूल्य पूंजी बने और मुस्लिम जनसाधारण के जीवन ने इन प्रभावों को स्वीकृति दी। भारतीय मुसलमान एक लम्बे समय से संकीर्ण दृष्टि (तंग नजरी) तथा आत्महीनता (इहसासेकम्तरी) के कारण आधुनिक शिक्षा को निषिद्ध वृक्ष (शजरे ममनूअः) समझते रहे। इस उद्देश्य से दारूल उलूम नदवतुल उलमा अपने पाठ्यक्रम में बारम्बार क्रान्तिकारी बदलाव लाया जिससे प्राचीन तथा आधुनिक के बीच की विशाल खाड़ी बड़ी सीमा तक पटगई और उसके प्रभाव से मुसलमान संकीर्णता से निकल कर धार्मिक विशालताओं (दीनी वुसअतों) में आ गये।

जमीअ़ीयते उलमा हिन्द, दारूल उलूम देवबन्द और नदवतुल उलमा के बनए हुए विद्वानों के संघ का नाम है। धार्मिक प्रसंगों (दीनी मुआमलात) में यह संघ दारूल उलूम देवबन्द सोच ही की भारवाहक है, अतएव इस संघ ने वैज्ञानिक ढंग से मुसलमानों में प्रचलित अनेकेश्वरवाद शिर्क तथा बिदअ़त के बहुत से कार्यों का विनाश किया और उनके जीवन में एकेश्वरवाद का स्पष्ट अर्थ उत्पन्न किया। तब्लीगी जमाअ़त, विशुद्ध इस्लामी विश्वासों तथा उपासनाओं का वाहक संघ है और उसने पहले दिन से नमाज, रोजा जकात, हज्ज, के अतिरिक्त अजकार (जप) व नवाफिल पर बहुत जोर दिया है। इस्लामी विश्वास की शुद्धता के साथ उसके निकट छः बातें प्राथमिकता रखती हैं जिनके लिए वह गश्त कराती और मुसलमानों को मस्जिद में बुलाती, तअलीम कराती और चिल्ला लगाने पर बहुत जोर डालती हैं। (शेष अगले अंक में)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

● मिस्र के सबसे बड़े इस्लामी ग्रुप अखवानुल मुस्लिमीन ने हुकूमत की तरफ से लगाई गई पाबन्दी के बावजूद पहली पाली के चुनाव में ही अपनी विजय दर्ज करा ली है। जबकि वर्तमान सरकार चलाने वाली नेशनल डेमोकरेटिक पार्टी को ११२ सीटें प्राप्त हुई थीं और दूसरी पाली में उसे केवल तीन सीटों पर संतोष करना पड़ा था जबकि दूसरे राऊंड़ में अखवानुल मुस्लिमीन आठ सीटों पर विजयी रही। इस प्रकार इन सीटों की संख्या ४२ हो गई है। चौथे राऊंड़ में अखवान को २६ सीटों के मिलने पर उसकी संख्या ७६ हो गई है।

इसी प्रकार अखवानुल मुस्लिमीन की कामयाबी ने यह सिद्ध कर दिया है कि मिस्र में अब भी राजनीति में इस्लाम का बोल बाला और लोकसभा में एक मजबूत विपक्ष का रोल अदा कर सकती है।

● ब्रिटेन की राजधानी लन्दन में संसार की सबसे बड़ी मस्जिद के निर्माण करने की तैयारी की जा रही है। इसमें एक वक्त में ४० हजार से अधिक लोग नमाज अदा कर सकते हैं उसके निर्माण पर १० करोड़ पाउंड खर्च आएगा। इसका क्षेत्रफल १६ एकड़ होगा। इस मस्जिद का नाम लन्दन मर्कज है जिसमें नमाज के अतिरिक्त एक पार्क, स्कूल, पुस्तकालय और बहार से आने वाले नमाजियों के लिए रहने का प्रबन्ध भी होगा। यह मर्कज ओलम्पिक कामपलेक्स के निकट बनाया जाएगा। ज्ञात रहे कि लन्दन में ओलम्पिक गेम २००१२ होने वाला है।

यह केन्द्र ओलम्पिक गेम के अवसर पर मुस्लिम क्वार्टर का काम करेगा जो गेम में भाग लेने वाले मुसलमानों और दर्शकों के लिए एक केन्द्र के समान होगा। मस्जिद और उसके चारों तरफ की इमारतें में सत्तर हजार लोगों के स्थान की व्यवस्था होगी।

● अलरियाज दैनिक समाचार पत्र के अनुसार प्रसिद्ध रूसी हथियार क्लाशकोफ के वर्तमान मिरवाईल क्लास कोफ का अड़सठवां निर्माण दिवस समारोह मनाया गया।

क्लाश कोफ के विभिन्न माडल सौ मिलियन से अधिक संख्या में संसार भर में प्रयोग किये जा रहे हैं। ५५ से अधिक देश इस को हथियार के रूप में प्रयोग करते हैं।

मिखाईल क्लाशोफ साइबेरियाई क्षेत्र के एक गांव में १६१६ में पैदा हुआ था।

एक लम्बे प्रयास और प्रयोगों के बाद उसने क्लाशकोफ का निर्माण किया जिसे रूसी फौज ने १६४० में अपने हथियारों में शामिल किया।

● स्पेन की हुकूमत ने सरकारी स्कूलों में इस्लाम धर्म की शिक्षा प्रारम्भ करने का फैसला कर लिया है लेकिन यह विषय वैकल्पिक होगा और पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि इसमें सीरतेनबवी सल्ल० (मुहम्मद सल्ल० की जीवनी) इस्लामी मूल्य और पुरातन कथाएं (कदीम रवायत) शिष्टाचार, जीवन शैली और गैर मुस्लिमों के साथ सम्बन्ध और जानकारी जैसे पक्षों पर बल दिया गया है। स्पेन सरकार के न्याय मंत्री ने अपने एक बयान में कहा है कि जल्द ही जेल में बन्द कैदियों को इस्लाम धर्म की शिक्षा देने का भी प्रबन्ध किया जाएगा।

● जर्मनी के गृहमंत्री और यूरोपी यूनियन के सहयोग से जर्मन मुस्लिम समुदाय के एक प्रशिक्षण केन्द्र ने जर्मन अध्यापिकाओं को इस्लाम धर्म की जानकारी देने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इस केन्द्र में तीन सौ मुस्लिम स्त्रियों प्रशिक्षण ग्रहण करती हैं और उनको जर्मन भाषा सिखाई जाती है ताकि यह आसानी के साथ जर्मन समाज में जिन्दगी गुजार सकें।

उपरोक्त केन्द्र में अध्यापिकाएं आती हैं और इस्लाम के बारे में सही जानकारी प्राप्त करती हैं जिसमें वह इस्लामी मूल्यों, और पुरातन कथाओं और इस्लामी सभ्यता आदि की शिक्षा ग्रहण करती हैं।

केन्द्र में विभिन्न विषयों पर वार्तालाप होते हैं जिनमें विद्यार्थी और उनके अभिभावक शरीक होते हैं। केन्द्र के इस प्रशिक्षण प्रोग्राम में इस्लाम के सम्बन्ध में जो भ्रांतियां हैं उनको दूर करने में सहायता मिलती है।

(शेष पृष्ठ ३७ पर)